पुस्तक

प्रश्न प्रदीप समाधान ज्योत



प्रकाशक

विमल चन्द किशोर कुमार

 दिल्ली

वर्ष– १९६८



प्रथम संस्करण–१००० प्रतिया



अमूल्य

साध्वी श्री [illegible] प्रभा जी के समत 2055
उदयपुर मे चातुर्[illegible] मे 41 ... [illegible]
तपस्या के उपलक्ष मे
भेंटकर्ता; भँवरलाल कुन्दनमल वैद
[illegible]

दो शब्द

मधुमास की मधुरिमा से कौन कवि हृदय अस्पर्शित रहा है। निर्मल नीर निर्झर के उन्मुक्त हास भरा निनाद ने किस पथिक का

ध्यान आकर्षित नही किया।

मधुर वीणा के तारो ने किस हृदय तत्र को झकृत नही किया।

शारदीय रजनी की रजत ज्योत्स्ना से कौन निर्लिप्त रहा—

निसर्ग मे ही सतोष की श्वास लने वाला मेरा मन मनन की परिधि परिक्रमा करते सौभाग्य से दृष्टिगत किया एक आत्मानुशास्ता को 'जो हुक्मगच्छाधिपति समता विभूति परम श्रद्धेय श्री १००८ श्री आचार्य, श्री नानेश आगम महर्षि तरुण तपस्वी श्री १००८ श्री युवाचार्य श्रीजी की

आज्ञानुवर्तिनी है उनका धन्य नाम है,शासन प्रभाविका महाश्रमणी रत्ना श्रद्धेया महासती प्रवर १००५ श्री इन्द्रकवर जी म॰सा॰

इनकी सानिध्य वर्ती विदुषी रत्ना श्री सुप्रभा श्रीजी मश्साश विदुषी रत्ना श्री अर्चना

दर्शना

पूर्णिमा विद्याभिलाषी जीश्री जिन प्रभाजी ठाणा ५ का के चातुर्मास के उपलक्ष मे समर्पित

मालव की शस्य श्यामला वीर प्रसविनी मालवधरा पर सयमी प्रवास के दौरान दर्शन एव सुखद समिधि ने मेरे जीवन के क्षणो को स्वर्णिम बनाया है, और जिनकी तत्वज्ञान क्षण प्रभा ने विकिर्ण तत्व मुक्ताओ को अनुस्युत करने की अपूर्व विद्या दिग्दर्शित कराई। विविध स्थलो से सग्रहित

यह सकलन अवश्य ही उपयोगी बनेगी एव भव्य तत्व जिज्ञासु आत्माओ के लिए आत्म तृप्ति प्रदान करे यही कामना है।

इस पुस्तक में शास्त्र विरूद्ध किसी भी प्रकार की क्षति एव प्रेस दोष से अशुद्धि रह गई हो तथा इस पुस्तक के प्रकाशन मे जो कमिया रही है, वो मेरी अल्प बुद्धि से ही रही है

उसके लिए क्षमाप्रार्थी हू।

नानेश सघ सदस्य
विमल न्द किशोर कुमार



रथ बढ़ रहा है, पथ भी प्रशस्त हो रहा है

मर्यादा ही उत्तम आचरण का सुरक्षा—कवच है। प्रभु महावीर का सदेश है कि आचरण की धारा सम्यक् ज्ञान के चट्टानी तटबन्धों में ही मर्यादित रहनी चाहिये।

आचार्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी म.सा. ने श्रमण सस्कृति की सुस्थिति एव उन्नयन के लिए "शात क्राति" का अभियान चलाया । इस अभियान को ओजस् प्रदान करना साधुवर्ग का दायित्व है। इसके लिए साधुवर्ग को जहा साधना के पथ पर अविचल रूप से आरूढ रहना है वहीं अपनी साधनागत अनुभूतियो की अभिव्यक्ति द्वारा सामान्य जन के लिए सुदृढ साधनासेतु का निर्माण भी करते चलना है। "शात क्राति" आत्मासाधना से ही परात्मसाधना के उदय का अभियान है जो आत्म पक्ष, परात्म पक्ष एव परात्म पक्ष एव तीनो को उजागर करने मे सक्षम है। साधु एव साध्वी समाज ने विगत बीस वर्षो में सम्यक् ज्ञानार्जन की दिशा मे अच्छी दूरी तय की है। रथ बढ रहा है, पथ भी प्रशस्त हो रहा है ......

— आचार्य श्री नानेश

अनुक्रमणिका

☆ अनासक्त भाव से योग में स्थित होकर कर्म करने से पाप का शमन होता है तथा निर्वाण का मार्ग प्रशस्त होता है। इसे ही कर्म बधन से छूटने का उपाय भी बताया गया है। इस प्रकार जो व्यक्ति दु ख–सुख, हानि–लाभ, जय–पराजय को समान समझता है ' तथा न प्रिय को प्राप्त कर हर्षित एव न अप्रिय को प्राप्त कर उद्विग्न होता है वह धीर पुरुष ही मिर्वाण का अधिकारी है।

☆ जैन धर्म में सामायिक की बहुत प्रतिष्ठा है। सामायिक राग–द्वेषादि वृत्तियों मे समताभाव की महिमा का ही बखा करता है। आचार्य अमितगति ने "सामायिक पाठ" मे समता भाव की धारणा के सच्चे स्वरूप का ही प्रतिपादन किया है।



नमस्कार-महामंत्र

प्रश्न १— नमस्कार मत्र को मत्र क्यों कहते है ?

उत्तर – जिसमे अक्षर कम तथा भाव अधिक हो, जिसके चिन्तन व मनन से दु खों से रक्षा होती है, उसे मत्र कहते है।

प्रश्न २—नमस्कार मत्र के रचयिता कौन है ?

उत्तर – तीर्थंकर भगवान।

प्रश्न ३—नमस्कार मत्र के अन्य नाम बताइये?

उत्तर -- (१) नवकार मत्र (२) नमस्कार मत्र (३) पच परमेष्ठि मत्र (४) नमोकार सूत्रम (५) पच—मगल (६) महाश्रुतस्कन्ध।

प्रश्न ४—इस महामत्र की क्या विशेषता है ?

उत्तर – यह मत्र गुणपूजक है, व्यक्ति पूजक नहीं।

प्रश्न ५—नमस्कार मत्र में कितने पद है ?

उत्तर – ५ पद है—अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्यायव सर्व साधु।

प्रश्न ६–पाच पदों में मूल पद कौन से है ?
उत्तर – सिद्ध व साधु । सिद्ध देह मुक्त है और आचार्य उपाध्याय व अरिहन्त ये तीनो पद साधु के विकसित रूप है।
प्रश्न ७–पाँच पदो के गुण कितने है ?
उत्तर – १०८
प्रश्न ८–१०८ गुण कौन–कौन से है ?
उत्तर – अरिहन्त के १२, सिद्ध के ८ आचार्य के ३६ उपाध्याय के २५ व साधु के २७ गुण है।
प्रश्न ९–माला के मनके १०८ क्यों होते है ?
उत्तर – ५ पदों के १०८ गुणों के आधार पर माला के मनके १०८ होते हैं।
प्रश्न १०– नमस्कार मत्र में पूजार्थक शब्द कौन सा है ?
उत्तर – महापुरुषों को नमस्कार करना ही पूजा है। अत नमो पूजार्थक शब्द है।
प्रश्न ११– पाँच पदों में देव और गुरु के कितने

पद है ?

उत्तर – देव के दो व गुरु के तीन पद है।

प्रश्न १२– नमस्कार मत्र के ५ पदों में सख्याता व अनता कितने है।

उत्तर – सिद्ध भगवान अनता व शेष चार सख्याता है।

प्रश्न १३– पच परमेष्ठि मे आधार, सस्कार व उपकार किसका ?

उत्तर – आधार सिद्ध भगवान का, उपकार अरिहन्त का, सस्कार आचार्य, उपाध्याय साधु का।

प्रश्न १४– नवकार मत्र का मगलाचरण कौन से सूत्रों में आता है ?

उत्तर – भगवती सूत्र व प्रज्ञापना सूत्र में।

प्रश्न १५– पॉच पदों के कितने अक्षर है ?

उत्तर – पैंतीस अक्षर।

प्रश्न १६– क्या गुरु शिष्य का वदन करते है ?

यदि हाँ, तो किस पाठ से ?

उत्तर — नमो लाए सव्व साहूण से गुरु भी शिष्य को वंदना करते है।

प्रश्न १७— नमस्कार मंत्र को १४ पूर्व का सार या द्वादशागी का सार क्यो कहते है ?

उत्तर — चौदह पूर्वधारी भी मृत्यु वेला में पच परमेष्ठि महामन्त्र का स्मरण करते हैं।

प्रश्न १८— शुद्ध मन से मंत्र–जाप करने से जीव क्या बन सकता है ?

उत्तर — अरिहन्त, सिद्ध व देव।

प्रश्न १९— इस महातंत्रा के स्मरण से किस–किस को लाभ हुआ ?

उत्तर — सुदर्शन सेठ, महासती सीता, अमर कुमार, द्रौपदी, सोमा, मैनासुन्दरी, श्रीपाल आदि।

प्रश्न २०— नव तत्वों मे से नवकार मत्र में

कितने तत्व है ?

उत्तर – नौ ही तत्व है।

प्रश्न २१– नमस्कार मत्र के दूसरे पद में कितने सिद्ध पाये जाते है ?

उत्तर– अनत सिद्ध।

प्रश्न २२– गणधर ५ पदों में से कौन से पद में आते है ?

उत्तर – पाचवे पद में ।

प्रश्न २३– भगवान महावीर अभी कौन से पद में है ?

उत्तर – दूसरे पद में।

प्रश्न २४– णमों अरिहन्ताण में कितने पद है ?

उत्तर – एक पद।

प्रश्न २५– क्या चारों गति के जीव नवकार मत्र का स्मरण कर सकते है ?

उत्तर – हाँ।

प्रश्न २६– नवकार मत्र नाम क्यों रखा ?

उत्तर – नौ के अक्षय अंक की तरह यह मंत्र अक्षय है, अत नवकार मत्र नाम रखा गया।

प्रश्न २७– नवकार मत्र के स्मरणपूर्वक मृत्यु पानेवाला जीव मरकर कहाँ जाता है ?

उत्तर – मनुष्य व देवगति में।

प्रश्न २८– नवकार मत्र का भाव स्मरण क्या भवी–अभवी दोनों कर सकते है ?

उत्तर – नहीं। सिर्फ भवी ही कर सकते है।

प्रश्न २९–तीर्थंकर का समावेश किस पद में होता है ?

उत्तर – अरिहन्त पद में।

प्रश्न ३०– पाँचो पदों में कितने पद वाले प्रतिक्रमण करते हैं ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय व साधु पद वाले।

प्रश्न ३१– ५ पदों मे से मति व श्रुत का ज्ञान किस–किस को होता है ?

उत्तर – अरिहन्त व सिद्ध को छोडकर शेष ३ पद वालो को।

प्रश्न ३२– चार पद हमेशा कहाँ पाये जाते है ?

उत्तर – महाविदेह क्षेत्र में।

प्रश्न ३३– पाँच पदों में से सबसे ज्यादा गुण कौन से पद में है ?

उत्तर – सख्या की दृष्टि से तीसरे पद में।

प्रश्न ३४– पाँच पदों में कितने पदवाले नींद लेते है ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय, व साधु पद वाले।

प्रश्न ३५– पाँच पद मे साधु कितने है ?

उत्तर – सिद्ध के अलावा शेष चार।

प्रश्न ३६– पाँच पदो में से कितने पदवाले भडोपकरण सहित विहार करते है ?

उत्तर – सिद्ध को छोडकर चार पद वाले।

प्रश्न ३७– पच परमेष्ठि में कितनी काया है?

उत्तर – सिद्ध भगवान के सिवाय शेष में त्रसकाय है।

प्रश्न ३८— पाँच पद मे से मोक्ष मे कितने पद है ?

उत्तर — सिद्ध पद।

प्रश्न ३६— जम्बूद्वीप में अभी कितने पद है ?

उत्तर — सिद्ध पद के आलवा शेष ४ पद।

प्रश्न ४०— पाँच पदों में से कितने पदों का उसी भव में मोक्ष में जाना निश्चित है ?

उत्तर — सि० पद वाले मोक्ष में है। अरिहन्त का उसी भव में मोक्ष में जाना निश्चित है, शेष का नहीं।

प्रश्न ४१ —पाँच पदों मे मुनष्य कौन है ?

उत्तर — सिद्ध पद के अलावा शेष चारों पद।

प्रश्न ४२— नमस्कार मत्र का समरण कब करना चाहिये ?

उत्तर — वैसे तो हर समय करना चाहिये। कम से कम प्रात काल उठते ही व रात्रि में सोते समय तो अवश्य ही

करना चाहिये।

प्रश्न ४३– नवकार मत्र के जाप का क्या साधन है ?

उत्तर – माला, अनानुपूर्वी।

प्रश्न ४४– पाँच पदो में गोचरी कितने पदवाले करते है ?

उत्तर – सिद्ध भगवान को छोडकर शेष चार पद वाले।

प्रश्न ४५– पाँच पदों में अक्षर की अपेक्षा सबसे छोटा पद कौन सा है।

उत्तर – णमो सिद्धाण।

प्रश्न ४६– पाँच पदों में रूपी कितने, अरूपी कितने ?

उत्तर – सिद्ध अरूपी, शेष शरीर व कर्म की अपेक्षा रूपी।

प्रश्न ४७– नवकार मत्र का छोटा रूप क्या है?

उत्तर – असिआउसा। अरिहन्त का – "अ",

सिद्ध का "सि", आचार्य का "आ", उपाध्याय का "उ"- साधु का "सा"।

प्रश्न ४८— नवकार मत्र के आगे "ॐ" लगता है या नहीं ?

उत्तर — नहीं। यह भगवान प्ररूपित सूत्र है। इसे छोटा—बड़ा नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न ४९— मनुष्य गति में कितने पद है ?

उत्तर — सिद्ध को छोडकर शेष चार।

प्रश्न ५०— पाँच पदों में कितने शाश्वत कितने अशाश्वत ?

उत्तर — सिद्ध शाश्वत। शेष चार एक जीव आश्री अशाश्वत, बहुत जीव आश्री शाश्वत।

प्रश्न ५१ —पॉच पदों में धर्मदेव कितने, देवाधिदेव कितने?

उत्तर — आचार्य, उपाध्याय, साधु—धर्मदेव।

अरिहन्त–देवाधिदेव। (तीर्थंकर की अपेक्षा) सिद्ध दोनों नहीं।

प्रश्न ५२– पॉच पदो मे से कौन कर्मसहित होते हुए भी पापा का सेवन नहीं करते ?

उत्तर – अरिहन्त चार कर्म होते हुए भी विभाव रूप पाप का सेवन नहीं करते।

प्रश्न ५३– पॉच पद मे कितने मनवाले कितने बिना मनवाले?

उत्तर – अरिहन्त द्रव्य मन वाले, आचार्य, उपाध्याय व साधु द्रव्य व भाव मन वाले, सिद्ध बिना मन वाले।

प्रश्न ५४– नवकार मत्र का प्रभाव कितने लोक मे है ?

उत्तर – तीनो लोक मे।

प्रश्न ५५– क्या युगलिक नवकार मत्र का स्मरण करते हैं ?

उत्तर – जाति स्मरण ज्ञान सपन्न व सम्यग्दृष्टि युगलिक करते हैं।

प्रश्न ५६– पाँच पदो में स्त्री कितने पद प्राप्त कर सकती है व पुरुष कितने ?

उत्तर – पहला दूसरा व ५ वाँ पद पुरुष स्त्री दोनों प्राप्त कर सकते है। ३ रा व ४ था सिर्फ पुरुष प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न ५७– वर्तमान मे हमारे नजदीक कितने पद व दूर कितने पद है ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय व साधु नजदीक व अरिहन्त, सिद्ध दूर है।

प्रश्न ५८– क्या नवकार मत्र के पदो को आगे पीछे किया जा सकता है ?

उत्तर – नहीं, तीर्थंकर भी नहीं कर सकते है। परिवर्तित करने से आशातना होती है।

प्रश्न ५९– पाँच पद में कितने साधक, कितने

साध्य है ?

उत्तर — सिद्ध पद साध्य, शेश चार पद साधक।

प्रश्न ६०— पॉच पद में कितने बोलते है ?

उत्तर — सिद्ध छोडकर शेष चाद पद वाले बोलते है।

प्रश्न ६१— पॉच पद में कितने सकषायी कितने अकषायी ?

उत्तर — अरिहन्त, सिद्ध अकषायी, शेष सकषायी।

प्रश्न ६२— पाँच पद मे कितने सरागी, कितने वीतरागी ?

उत्तर — अरिहन्त व सिद्ध वीतरागी, शेष सरागी भी हैं वीतरागी भी है। (६ ठवें से १० वे गुणस्थान तक सरागी, ११ वे, १२ वें गुणस्थान मे वीतरागी' इस अपेक्षा से।

प्रश्न ६३— मन की बात जानने वाले कितने पद

हैं ?

उत्तर – अरिहन्त सिद्ध तो मन की बात जानते है। शेष मन पयार्य ज्ञानी हो तो जानते हैं अन्यथा नहीं।

प्रश्न ६४– पाँच पदों में सशरीरी कितने अशरीरी कितने ?

उत्तर – सिद्ध भगवान अशरीरी, शेष चार सशरीरी।

प्रश्न ६५– कितने पद हसते है ?

उत्तर – अरिहत, सिद्ध मोहकर्म के क्षय हो जाने से नहीं हसते। शेष ३ हसते भी है, नहीं भी।

प्रश्न ६६– पाँच पदों में चार संज्ञा वाले कितने?

उत्तर – 'अरिहत सिद्ध मे नहीं होती। शेष तीन मे होती भी है और नहीं भी।

प्रश्न ६७– पाँच पदों में कितने छंद्मस्थ कितने, सर्वज्ञ कितने ?

उत्तर – अहिरन्त, सिद्ध सर्वज्ञ। शेष ३ छद्मस्थ।

प्रश्न ६८– पॉच पदों मे अन्तरात्मा,, बहिरात्मा व परमान्ता कौन–कौन ?

उत्तर – अरिहन्त, सिद्ध परमात्मा। शेष ३ अन्तरात्मा।

प्रश्न ६९– पॉच प्रतिक्रमण मे से पॉचों पद किस–किस का प्रतिक्रमण करते हैं ?

उत्तर – अरिहत,सिद्ध भगवान प्रतिक्रमण नहीं करते। अप्रमत्त आचार्य, उपाध्याय व साधु कषाय एव अशुभ योग का, ११ वें, १२ वें गुणस्थानवर्ती शुभ योग का एव प्रमादी साधु मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय व योग इन पॉचों का प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रश्न ७०– पॉचों पदों में हेय, ज्ञेय, उपादेय कौन–कौन से है ?

उत्तर – चौथे, पाँचवे गुणस्थान वालो के लिये पाँचों पद उपादेय है। आचार्य, उपाध्याय व साधु के लिये ४ या ५ पद उपादेय है। अरिहत के लिये सिद्ध उपादेय है। सिद्ध के लिये पाँचों पद ज्ञेय है।

प्रश्न ७१– पाँचों पदो के अतिरिक्त चाद पद के रचयिता कौन ?

उत्तर – आचार्य।

प्रश्न ७२– पच परेमेष्ठि में साधुपना कितने पदवाले पालते है ?

उत्तर – सिद्ध पद को छोडकर चार पद वालें।

प्रश्न ७३– अरिहत पद द्रव्य है, गुण है या पर्याय

उत्तर – अरिहन्त पद पयार्य है। यह पयार्य गुणों में से प्रकट होती है। गुण द्रव्य

मे रहते हैं।

प्रश्न ७४– एक नवकार मत्र के कायोत्सर्ग का क्या फल होता है?

उत्तर – १६ लाख ६३ हजार २ सौ ६३ पल्योपम का देवायुष्य बधता है।

प्रश्न ७५– पच परमेष्ठि में कितने दुख को जानते भी हैं वेदते भी हैं ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय, साधु।

प्रश्न ७६– कौन दुःख जानते हैं पर वेदते नहीं ?

उत्तर – अरिहन्त को स्वय अशाता का उदय हो सकता है, पर वेदते नहीं। सिद्धो को न दुख होता है न वेदते है।

प्रश्न ७७– समत्वदर्शी व समस्तदर्शी कौन ?

उत्तर – आचार्य, उपाध्याय, साधु समत्वदर्शी। अरिहत सिद्ध समस्तदर्शी।

प्रश्न ७८– कर्म भोगने वाले परमेष्ठि कौन से है ?

उत्तर – अरिहन्त, आचार्य, उपाध्याय व साधु।

प्रश्न ७९– कौन से पद वाले अपने कर्मों की निर्जरा होते हुए भी देख सकते हैं ?

उत्तर – अरिहन्त

प्रश्न ८०– पाच पदों मे आध्यात्मिक कॉलेज के सस्थापक–सचालक कौन है ?

उत्तर – सस्थापक तीर्थंकर। सचालक–गणधर और आचार्य महाराज।

प्रश्न ८१ –पॉच पदों मे तीर्थ की स्थापना करने वाले कौन ?

उत्तर – अरिहंत पद वाले जो तीर्थंकर है वे तीर्थ की स्थापना करते हैं।

प्रश्न ८२– कौन से पदवाले जानते है, देखते हैं, पर बोलते नहीं।

उत्तर – सिद्ध व मूक केवली (अरिहन्त) ।

प्रश्न ८३– सदाकाल ऊर्ध्वलोक में कौन रहते है ?

उत्तर – सिद्ध प्रभु।

प्रश्न ८४– अरिहन्त व सिद्ध में कर्मापेक्षा क्या

अन्तर है ?

उत्तर – अरिहन्त ४ अघाती कर्म युक्त है। सिद्ध कर्म मुक्त है।

प्रश्न ८५– अरिहन्त व सिद्ध में क्षेत्रापेक्षा क्या अन्तर है ?

उत्तर – अरिहन्त निर्यक लोक व अधोलोक में होते हैं। सिद्ध ऊर्ध्वलोक में।

प्रश्न ८६– अरिहन्त व सिद्ध में सख्यापेक्षा क्या अन्तर ?

उत्तर – अरिहन्त जघन्य २० उ. १७० होते है। सिद्ध अनन्त होते है।

प्रश्न ८७– कितने पदों में ज्ञान है पर मन नहीं ?

उत्तर – अरिहन्त व सिद्ध।

प्रश्न ८८– पाँच पदों में अपूर्ण भगवान कितने व पूर्ण भगवान कितने ?

उत्तर – अरिहत सिद्ध पूर्ण, शेष ३ अपूर्ण।

प्रश्न ८९– १००८ लक्षण किस पद में पाये

जाते है?

उत्तर – अरिहन्त में ।

प्रश्न ६०– कितने पदवाले शिष्य बनाते हैं ?

उत्तर – ४ पद वाले (सिद्ध छोडकर)।

प्रश्न ६१– कितने पद वाले सीमन्धर स्वामी को देख सकते हैं ?

उत्तर – अरिहन्त व सिद्ध। शेष पद वाले विशिष्ठ ज्ञानी हो तो देख सकते है।

प्रश्न ६२– पाँच पदों का आयुष्य कितना ?

उत्तर – अरिहन्त, आचार्य उपाध्याय व साधु का ज. १०८ वर्ष झाओेरा, उ० देश ऊणी क्रोडपूर्व। सिद्धों का सादि अपर्यवसित।

प्रश्न ६३– ५ पदों की अवगाहना कितनी ?

उत्तर – अरिहन्त की अवगाहना तीर्थंकर की अपेक्षा १०७ हाथ की, सामान्य केवली की अपेक्षा प्रत्येक हाथ की उ० ५००

धनुष की। सिद्ध की ज० १ हाथ ८ अगुल। म० ४ हाथ १६ अगुल उ० ३३३ धनुश ३२ अगुल। आचार्य, उपाध्याय व साधु की अरिहन्त के समान।

प्रश्न ६४– अढाई द्वीप के बाहर व भीतर कितने पद पाते है?

उत्तर – अढाई द्वीप के भीतर सिद्ध को छोडकर शेष चार पद है और बाहर साहरण आसरी आचार्य, उपाध्याय व साधु।

प्रश्न ६५– भगवान महावीर के निर्वाण के बाद पॉचो पदो में (अरिहन्त, आचार्य, साधु मे) प्रथम पदाधिकारी का नाम बताइये।

उत्तर – अरिहन्त–गौतम स्वामी, आचार्य–सुधर्मा स्वामी, साधु जम्बूस्वामी।

प्रश्न ६६— अरिहन्तादि में आभूषण होते हैं क्या? होते है तो कितने के ?

उत्तर — ३४ अतिशय रूप आभूषण अरिहन्त के होते हैं।

प्रश्न ६७— पाँच पदों में निर्ग्रन्थ प्रवचन के उपदेश कौन होते है।

उत्तर — अरिहन्त, आचार्य, उपाध्याय व साधु।

प्रश्न ६८— पाँच पदों में गुणस्थान कितने हैं?

उत्तर — अरिहन्त में १३—१४ वाँ सिद्ध मे गुणस्थान नहीं। आचार्य, उपाध्याय व साधुजी में ६ से १२ वें तक।

प्रश्न ६९— पाँच पदों में ध्यान कौन—कौन सा है ?

उत्तर — अरिहन्त में शुक्ल ध्यान, सिद्ध मे ध्यान नहीं। शेष ३ पद में आर्त्त, धर्म व शुक्ल ध्यान।

प्रश्न १००—पॉच पदो में वेद कितने ?

उत्तर — अरिहन्त सिद्ध अवेदी, आचार्य–उपाध्याय में एक पुरुष वेद। साधु मे २ वेद स्त्री व पुरुष तथा अवेदी भी।

प्रश्न १०१—पॉच पदो मे लेश्या कितनी पायी जाती है ?

उत्तर — अरिहन्त मे शुक्ल लेश्या, सिद्ध अलेशी, बाकी में छहों लेश्या।

प्रश्न १०२—पाँच पद में सयोगी और अयोगी कितने ?

उत्तर — पाँच पद मे अरिहन्त सयोगी–अयोगी दोनो। सिद्ध अयोगी। शेष पद सयोगी।

प्रश्न १०३—पॉच पदो मे उपयोग कितने ?

उत्तर — अरिहन्त सिद्ध दोनो मे दो उपयोग–केवलज्ञान–केवल दर्शन। आचार्य, उपाध्याय, साधु मे ७

उपयोग–४ ज्ञान व ३ दर्शना।

प्रश्न १०४–पाँच पदों में भाव कितने–कितने पाये जाते हैं ?

उत्तर – अरिहन्त मे ३ भाव (औदायिक, क्षयिक, पारिणामिक) सिद्ध में २ भाव (क्षायिक व पारिणामिक), शेष तीन पद में पाँचों ही भाव (औदायिक, क्षायिक, औपशामिक, क्षयोपशमिक, पारिणामिक) पाये जाते है।

प्रश्न १०५–पाँच पदों मे कितने पद वालों के गुरु होते हैं ?

उत्तर – अरिहन्त, सिद्ध के गुरु नहीं होते, शेष ३ की भजना।

प्रश्न १०६–५ पदो से, किस–किस पद मे कौन–कौन सा चारित्र होता है ?

उत्तर – अरिहन्त मे यथाख्यात चारित्र, सिद्ध में चारित्र नहीं। शेष में ५ चारित्र ।

प्रश्न १०७—पाँच पदों मे से किस–किस पद में कौन–कौन सी पदवी पायी जाती है ?

उत्तर – अरिहन्त में तीर्थंकर, केवली, साधु व सम्यग्दृष्टि–ये ४ पदवी। सिद्ध में सम्यग्दृष्टि केवली की दो पदवी। आचार्य, उपाध्याय व साधु मे दो पदवी–साधु व सम्यग्दृष्टि।

प्रश्न १०८—पॉच पदों में से कितने पदवाले मिल सकते हैं ?

उत्तर – चार पद वाले आपस मे मिल सकते है।

प्रश्न ११६—पाँच पदों में किसके कितने परीषह होते हैं ?

उत्तर – अरिहन्त के ११, सि० के नहीं, शेष ३ पद मे २२ ही परीषह होते हैं?

प्रश्न ११०—५ पदो में ८ आत्मा कितने पदों में से कितनी आत्मा पायी जाती है ?

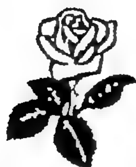
उत्तर — अरिहन्त मे ७ आत्मा (कषाय टली) सिद्ध मे ४, शेष पद मे ८ आत्मा।

प्रश्न १११—पॉच पदो मे सहनन कितने ?

उत्तर — अरिहन्त में वज्रऋषभ नाराच सहनन, सिद्ध में सहनन नहीं, शेष मे ६ सहनन।

प्रश्न ११२—पाच पदो में सस्थान कितने हैं ?

उत्तर — अरिहन्त में समचतुरस्त्र सस्थान, सिद्ध मे सस्थान नहीं, शेष मे ६ सस्थान।



अरिहन्त

प्रश्न १ – अरिहन्त अठारह दोष रहित है, कौन से ?

उत्तर – अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, हास्य, रति, अरति, शोक, मद, हिंसा, भय, काम,। क्रोध, माया लोभ, अलीक, अचोर्य, मत्सरता।

प्रश्न २ – सिद्धो को सर्वप्रथम नमस्कार न करके अरिहतो का क्यों किया गया।

उत्तर – परोक्ष सिद्धो का स्वरूप बतलाने वाले और जगत को सत्य की अखण्ड ज्योति के दर्शन कराने वाले परोपकारी श्री अरिहत ही हैं।

प्रश्न ३ – अरिहन्त पद मे हेय ज्ञेय उपादेय क्या है ?

उत्तर – अरिहन्त का स्वरूप जानना ज्ञेय है,

उनके गुणों को ग्रहरण करना उपादेय है और अरिहन्त पद त्याग कर सिद्ध पद प्राप्ति की अपेक्षा हेय है।

प्रश्न ४ – अरिहन्त भगवान क्या नहीं देखते ?

उत्तर – अरिहन्त भगवान स्वप्न नहीं देखते।

प्रश्न ५ – अरिहन्त भगवान क्या नहीं देते ?

उत्तर – अरिहन्त भगवान अभवी को दीक्षा नहीं देते ।

प्रश्न ६ – अरिहन्त भगवान क्या नहीं करते ?

उत्तर – प्रमाद नहीं करते, कषाय नहीं करते ।

प्रश्न ७ – अरिहन्त भगवान क्या नहीं लेते ?

उत्तर – नींद नहीं लेते।

प्रश्न ८ – अरिहन्त भगवान का क्या नहीं जाता?

उत्तर – अरिहन्त भगवान का केवल ज्ञान नहीं जाता।

प्रश्न ६ – अरिहन्त भगवान क्या नहीं कहते ?

उत्तर – जीव की आदि नहीं कहते।

प्रश्न १०– एक समय में एक साथ कम से कम कितने अरिहन्त हो सकते हैं ?

उत्तर – दो करोड।

प्रश्न ११– एक समय में एक साथ अधिक से अधिक कितने अरिहन्त हो सकते हैं?

उत्तर – नव करोड।

प्रश्न १२– अरिहन्त किसे कहते है ?

उत्तर – जिनके चारधनघातिक कर्मनष्ट हो गये हैं, वे अरिहन्त है।

प्रश्न १३– चार घनघाती कर्म कौनसे है और घनघाती कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर – ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अतराय। जो आत्मा के गुणो का घात करें, वे घनघातिक कर्म हैं।

प्रश्न १४– अरिहन्त पद का वर्ण क्या है ?

उत्तर – अरिहन्त पद की आत्मा की पर्याय है अत अरूपी है।

प्रश्न १५— अरिहन्त के पाच उत्कृष्ट क्या है ?

उत्तर — अनुत्तर ज्ञान (केवलज्ञान)
अनुत्तर दर्शन (केवल दर्शन)
अनुत्तर चारित्र (यथाख्यात चारित्र)
अनुत्तर तप (शुक्ल ध्यान)
अनुत्तर शक्ति (पण्डित वीर्य)

प्रश्न १६— क्या अभवी अरिहन्त बन सकता है ?

उत्तर — नहीं।

प्रश्न १७ —अरिहन्त की देशना सुनने कितनी गति के जीव आते हैं ?

उत्तर — तीन गति के (नारकी को छोड़कर)

प्रश्न १८— कितने प्रकार की परिषद् भगवान की (देशना) वाणी सुनती है ?

उत्तर — बारह प्रकार की परिषद्। चार प्रकार के देव, चार प्रकार की देविया, मनुष्य, मनुष्यणी, निर्यंच, निर्यंचणी।

प्रश्न १९— अरिहन्त देवाधिदेव को छोडकर अन्य

सरागी देव की आराधना करने से कौन सा पाप लगता है ?

उत्तर – अठारहवा मिथ्यादर्शन शल्य।

प्रश्न २०– भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् कितने काल तक भरत क्षेत्र मेंअरिहंत रहे ?

उत्तर – ६४ वर्ष तक।

प्रश्न २१– अरिहन्त पद प्राप्ति अरिसा भवन में किसने की ?

उत्तर – भरत चक्रवर्ती ने।

प्रश्न २२– तीर्थंकर के कितने कल्याणक होते है ?

उत्तर – पाच।

प्रश्न २३– कौन–कौन से?

उत्तर – च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल और निर्वाण कल्याणक।

प्रश्न २४– अरिहन्त कितने कर्म का बंध करते है ?

उत्तर – एक (सातावेदनीय का)।

प्रश्न २५– अरिहन्त किस कर्म को पूरे जीवन

काल मे नहीं बाधते है ?

उत्तर — आयुष्यकर्म को।

प्रश्न २६— ६ करोड़ अरिहन्त कब हुए थे ?

उत्तर — दूसरे अजितनाथ तीर्थकर के समय में।

प्रश्न २७— अरिहत के १२ गुण कौनसे है ?

उत्तर — (१) अनाश्रव (२) अममत्व (३) अकिञ्चनत्व (४) छिन्नशोक (५) निरुपलेप (६) व्यपगत प्रेम राग, द्वेष, मोह (७) निर्ग्रन्थ प्रवचन के उपदेशक (८) शास्त्र के ज्ञाता (६) अनतज्ञानी (१०) अनतदर्शी (११) अनत चारि (१२) अनत बलवीर्य सपन्न।

प्रश्न २८— नवकार मत्र गिनने से क्या लाभ ?

उत्तर — १. पढने से पहले नवकार गिनने से बुद्धि बढ़ती है (ज्ञानावरणीय)

२. सोने से पहले गिनने से नींद अच्छी आती है (दर्शनावरणीय)

३. भोजन के पहले गिनने से खाया हुआ पच जाता है जिससे आरोग्य लाभ होता है (वेदनीय)

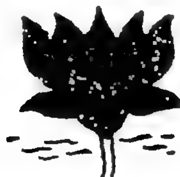
४. क्लेश के समय गिनने से शाति समाधि का अनुभव होता है (मोहनीय)

५. वाहन में बैठते समय गिनने से अकस्मात मृत्यु से बच सकते है (आयु)

६. तन्मयता से गिनने पर कीर्ति व यश मिलता है (यश)

७. पूज्य बुद्धि से अहोभाव पूर्वक गिनने से आदरणीय पूज्यनीय बन जाता है। (गोत्र)

८. हर घडी हर पल गिनने से प्रत्येक कार्य की अन्तराय टूटती है (अन्तराय)



सिद्ध

प्रश्न १ — सिद्ध क्षेत्र कहा पर है ?

उत्तर — लोक के अग्रभाग पर।

प्रश्न २ — सिद्धशिला कितनी लम्बी चौडी है ?

उत्तर — पैतानीस लाख योजन की लम्बी चौडी है।

प्रश्न ३ — चौदह प्रकार के सिद्ध कौन से है ?

उत्तर — तीन लोक (उर्ध्वलोक, मध्यम लोक, अधोलोक)

तीन वेद (स्त्री, पुरुष, नपुसक)

तीन लिग (अन्य लिग, स्वलिग, गृहस्थ लिग)

तीन अवगाहना (जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट)

समुद्र से और अवशेष जल से।

प्रश्न ४ — सिद्ध भगवान के कितने गुण है ?

उत्तर – जघन्य आठ (अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, क्षायिक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना, अमूर्तिक अगुरुलघु और अनन्त बलवीर्य) उत्कृष्ट इकतीस गुण है।

प्रश्न ५– सिद्ध भगवान की ज्यादा से ज्यादा कितनी अवगाहना है ?

उत्तर – तीन सौ तैतीस धनुष बत्तीस अगुल।

प्रश्न ६– क्या सिद्ध भगवान विहार करते है ?

उत्तर – हॉ। जहा से चरम शरीर का त्याग करते है, वहा से सिद्ध शिला तक (विहार) करते है।

प्रश्न ७– सिद्ध होने वाली आत्मा सबसे ज्यादा किस गति से आती है ?

उत्तर – देवगति से (वैमानिक देव) (पहले देवालोक के देव)

प्रश्न ८– कहा से निकली हुई आत्माए सिद्ध

नहीं होती ?

उत्तर – पाचवी, छठी, सातवीं नरक, तेउकाय, वायुकाय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय से निकली आत्मायें सिद्ध नहीं होती।

प्रश्न ९– सिद्ध भगवान की स्थिति कितनी है ?

उत्तर – सादि अपरविसित अर्थात् अनन्तकाल की है।

प्रश्न १०– क्या अरिहन्त और सिद्ध मिल सकते है ?

उत्तर – नहीं। अरिहन्त लोक में है और सिद्ध लोक के अग्रभाग पर मोक्ष में है।

प्रश्न ११– अनन्ता जीव सिद्ध क्षेत्र पर कैसे रहते है ?

उत्तर – एक कमरे मे हजार बल्ब का प्रकाश समा सकता है फिर अरूपी अनन्त आत्मा के एक साथ रहने में कोई बाधा नहीं।

प्रश्न १२– क्या अनन्त सिद्धो के ज्ञान दर्शन आदि गुण स्वतत्र है ?

उत्तर – हाँ। सभी के गुण स्वतत्र है।

प्रश्न १३– सिद्ध भगवान कितने भेद से सिद्ध होते है ?

उत्तर – पद्रह भेद से।

प्रश्न १४– सिद्ध प्रभु का नाम गोत्र क्या है ?

उत्तर – सिद्ध प्रभु का नाम गोत्र नहीं है। कर्म रहित होने से।

प्रश्न १५– सिद्ध प्रभु की आकृति है ?

उत्तर – सिद्ध प्रभु की आकृति नहीं है वे निराकार है।

प्रश्न १६– सिद्ध प्रभु को नींद आती है कि नहीं ?

उत्तर – सिद्ध प्रभु नींद नहीं आती सदा जागृत ही रहते है।

प्रश्न १७ –सिद्ध प्रभु अतरात्मा, बहिरात्मा या परमात्मा है ?

उत्तर – सिद्ध पभु परमात्मा है परम श्रेष्ठ

आत्मा ।

प्रश्न १८– स्त्री, पुरुष नपुसक कितने–कितने सिद्ध होते है ?

उत्तर – स्त्री बीस, पुरुष एक सौ आठ और नपुसक १० सिद्ध होते है।

प्रश्न १६– क्या सिद्ध भगवान तप करते है ?

उत्तर – नहीं। कर्म रहित होने से तप की जरूरत नहीं।

प्रश्न २०– सिद्ध भगवान जन्म धारण करते है क्या ?

उत्तर – नहीं। अपुनरावर्त रूप से सिद्ध हो गये है। कर्म रहने पर ही जीव जन्म लेता है।

प्रश्न २१– सिद्ध भगवान के अन्य नाम बताइए ?

उत्तर – निरजन, निराकार, अजर, अमर, परमात्मा, शिव आदि।

प्रश्न २२– सिद्ध क्या नहीं करते हैं ?

उत्तर – जन्म–मरण।

प्रश्न २३– १५ भेद के सिद्ध कौन से है ?

उत्तर – (१) *तीर्थसिद्ध*–तीर्थ की स्थापना के बाद जो मोक्ष गए है वे गणधर आदि।

(२) *अतीर्थसिद्धा*– तीर्थ स्थापना के पूर्व या तीर्थ विच्छेद पश्चात जो मोक्ष गए वे ।

(३) *तीर्थकर सिद्ध*–तीर्थकर पद प्राप्त करके मोक्ष मे गए वे २४ तीर्थकर।

(४) *अतीर्थ कर सिद्धा*–सामान्य केवली होकर मोक्ष मे गए जैसे गजसुकुमार आदि सत।

(५) *स्वय बुद्ध सिद्धा*–स्वय, जाति स्मरण ज्ञान से प्रतिबोध पाकर मोक्ष मे गये यथा कपिल केवली

(६) *प्रत्येक बुद्ध सिद्धा*– कोई वस्तु विशेष के निमित्त से प्रतिबोध

पाकर मोक्ष में गये जैसे करकड मुनि

(७) *बुद्ध वोधित सिद्धा*– गुरु उपदेशक से बोद्ध प्राप्त से प्रतिबोध पाकर मोक्ष में गया थावच्चापुत्र

(८) *स्त्री लिग सिद्धा*– स्त्री शरीर से मोक्ष में गए श्री चदनबाला आदि साध्वी गण।

(६) *पुरुष लिग सिद्धा*–पुरुष शरीर से मोक्ष मे गए श्री गौतम आदि सत।

(१०) *नपुसक लिग सिद्धा*–नपुंसक शरीर से मोक्ष में गए श्री गागेय अणगार।

(११) *स्वलिग सिद्धा*–जैन साधु वेश से मोक्ष मे गए जम्बू स्वामी।

(१२) *अन्य लिग सिद्धा*– जैन

अतिरिक्त सन्यासी वेश मे मोक्ष मे गए वल्कल चीरी।

(१३) *गृहस्थ लिग सिद्धा*—गृहस्थ वेश मे मोक्ष कए मरूदेवी माता।

(१४) *एक सिद्धा*—एक समय मे एक से अधिक सिद्ध हो—महावीर प्रभु।

(१५) *अनेकसिद्ध*— एक समय में एक से अधिक सिद्ध हो ऋषभदेव भगवान

प्रश्न २४— उक्त १५ भेद मे ऐसा कौनसा बोल है जिसमें १४ भेद अतर्निहित होते हैं ?

उत्तर — स्वलिग के द्रव्य और भाव मे भाव स्वलिग मे १४ बोलो का समावेश हो जाता है।



आचार्य

प्रश्न १ – आचार्य महाराज के गुण कितने है ?

उत्तर – छत्तीस गुण।

प्रश्न २ – छत्तीस गुण कौन–कौन से है ?

उत्तर – पाच महाव्रत पाले, पाच इन्द्रिय जीते, पाच आचार पाले, चार कषाय टाले, पाच समति तीन गुप्ति शुद्ध आराधें, नववाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले।

प्रश्न ३ – आचार्य कितने प्रकार के हो सकते है ?

उत्तर – तीन प्रकार के। धर्माचार्य, शिल्पाचार्य, कलाचार्य।

प्रश्न ४ – प्रभु महावीर के निर्वाण के अनन्तर कौन आचार्य हुए ?

उत्तर – सुधर्मा स्वामी।

प्रश्न ५ – वर्तमान शासन के कितने आचार्य मुक्तिगामी हुए ?

उत्तर – दो सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी

प्रश्न ६ – इस अवसर्पिणी काल में अन्तिम चौदह पूर्वधारी आचार्य कौन हुए ?

उत्तर – आचार्य भद्रबाहु स्वामी।

प्रश्न ७ – अन्तिम पूर्वधारी कौन आचार्य हुए ?

उत्तर – देवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण।

प्रश्न ८ – तपोनिधि आचार्य हुक्मीचंदजी म.सा. के जीवन की विशेषताए बताइये ?

उत्तर – आजीवन मिठाई त्याग, एक चादर धारण करना प्रतिदिन तेरह द्रव्य, इक्कीस वर्ष बेलेबेले पारणा करना आदि।

पश्न ९ – तेतीस वर्ष एकान्तर तप की आराधना किस आचार्य ने की ?

उत्तर – महानविभुति आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. के ने।

प्रश्न १०– किसके प्रभाव से कोढ की बिमारी

हुई ?

उत्तर — आचार्य हुक्मीचदजी म.सा. के प्रभाव से ।

प्रश्न ११— वर से वैरागी कौन बने?

उत्तर — आचार्य उदयसागर जी म.सा.।

प्रश्न १२— छ आरो का वर्णन सुनकर वैराग्य किसे आया?

उत्तर — समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा.।

प्रश्न १३— साप के साथ चार्तुमास किसने किया ?

उत्तर — आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने कानौड मे।

प्रश्न १४— पद व्यामोट का त्याग किसने किया ?

उत्तर — आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. ने।

प्रश्न १५— तीन घन्टे मे प्रतिक्रमण किस आचार्य ने याद किया ?

उत्तर – आचार्य जयमल जी म.सा.ने।

प्रश्न १६– आचार्य नानेश के शासन की प्रमुख विशेषताये कौन सी है ?

उत्तर – (१) ८३ दिन का सथारा (२) उपवास की तपस्या (३) धर्मपाल उद्धार (४) पच्चीस दीक्षा एक साथ।

प्रश्न १७– आचार्य नानेश के ऐसे आदर्श शिष्य का नाम बताईये जो विवाह के अल्पसमय पश्चात् सपत्नी दीक्षित हुए ?

उत्तर – पडित रत्न श्री धर्मेश मुनिजी म.सा. एव वि श्री जयश्री जी म.सा.।

प्रश्न १८– आचार्य श्री नानेश की मौलिक देन क्या है ?

उत्तर – समीक्षण ध्यान, समतादर्शन और व्यवहार।

प्रश्न १९– आचार्य स्वयभव ने किस सूत्र की

सकलित किया, किस लिए ?

उत्तर – दशवैकालिक सूत्र–पुत्र मनाक के लिए।

प्रश्न २०– कौन से आचार्य के निर्वाण के अनन्तर दस बोलों का विच्छेद हुआ ?

उत्तर – आचार्य जम्बुस्वामी।

प्रश्न २१– दस बोल कौन से है ?

उत्तर – परम अवधिज्ञान, मन पर्यायज्ञान केवल ज्ञान, परिहार विशुद्ध चरित्र, सुक्ष्म सपराय चारित्र यथाख्यात चारित्र, पुलाकलब्धि, आहारक लब्धि, जिन कल्प, क्षायिक समाकित।

प्रश्न २२– किस काल में आचार्य नहीं होते ?

उत्तर – युगलिक काल एव दु खम दु खम आरे में ।

प्रश्न २३– आचार्य कितनी सम्पदाओं से युक्त होते हैं ?

उत्तर – आठ सम्पदा।

प्रश्न २४– आठ सम्पदा कौन सी है ?

उत्तर – आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, शरीर सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचन सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोग मति सम्पदा, सग्रह परिज्ञा सपदा।

प्रश्न २५– आचार्य को किस नाम से पुकारा जाता है ?

उत्तर – सघ नायक श्रमण सघ पिता, पट्टधर, गच्छास्तम्भ।

प्रश्न २६– आचार्य का कार्य क्या है ?

उत्तर – पाच आचार स्वय पाले अन्य को पालन करवाते है वे आचार्य कहलाते है।

प्रश्न २७– पाच आचार कौन से है ?

उत्तर – ज्ञान आचार, दर्शन आचार, चारित्र आचार, वीर्चाचार, तपाचार।

प्रश्न २८– आचार्य पद किसको दिया जाता है ? क्या जो दीक्षा या उम्र में बड़े हो उसे दिया जाता है ?

उत्तर – दीक्षा या उम्र में बड़ा हो यह कोई नियम नहीं है जो दीक्षा या उम्र मे चाहे छोटे हों आचार्य पद के योग्य हो चतुर्विघ सघ की सार सम्भाल कर सके आठ सम्पदा से युक्त हो उन्हें आचार्य पद दिया जाता है।

प्रश्न २९– आचार्य पदवी किस प्रकार दी जाती है ?

उत्तर – चतुर्विघ सघ के सम्मुख साधु साध्वी की सर्वानुमति से।

प्रश्न ३०– जब तक पूर्वाचार्य विद्यमान हो तब जिसे आचार्य पदवी दी गई हो उन्हे क्या कहते हैं ?

उत्तर – युवाचार्य।

प्रश्न ३१– इस समय भरत क्षेत्र के आचार्य है या नहीं या कब तक रहेंगे ?

उत्तर – अभी आचार्य है पाचवे आरे के अत तक रहेंगे।

प्रश्न ३२– साध्वी को आचार्य पद मिलता है या नहीं ?

उत्तर – नहीं।

प्रश्न ३३– साध्वीजी को आचार्य पद क्यों नहीं दिया जाता ?

उत्तर – साध्वी अति सुकोमल हृदया होती है कठोर अनुशासक नहीं हो सकती है शारीरिक स्थिति आदि कारणो से आचार्य पद के योग्य नहीं है।

प्रश्न ३४– आचार्य पद किसे नहीं मिलता ?

उत्तर – काणा, अधा, लुला, लगडा आदि तथा दूसरा सत्य महाव्रत चौथा ब्रह्मचर्य व्रत दुषित हो, अन्य तीर्थी, गृहस्थ

वेश में हो स्त्री साध्वी आदि को नहीं मिलता।

प्रश्न ३५– आचार्य अपने से बड़े (दीक्षा मे) को वदन करते है ?

उत्तर – हाँ। अपने से बडों को वन्दना करते हैं परन्तु आचार्य पद गरिमापूर्ण बड़ा होने से रत्नाधिक वदना नहीं करने देते हैं।

प्रश्न ३६– क्या रत्नाधिक की आज्ञा मानते है ?

उत्तर – दीक्षा में बडो की आज्ञा प्रमाण से आचार्य नहीं चलते है क्योंकि स्वय आज्ञा प्रवर्तन करते है।

प्रश्न ३७– आचार्य किस लोक में रहते है ?

उत्तर – मध्यलोक, अधोलोक मे।

प्रश्न ३८– आचार्य किस गति में जाते है ?

उत्तर – आचार्य की गति देवलोक की है अगर पूर्ण कर्मक्षय कर दे तो मोक्ष

में जाते है। कुछ अधुरी साधना हो तो तीसरे भव मे निश्चित आचार्य को मोक्ष मिलता है।

प्रश्न ३९– आचार्य पद रूपी है या अरूपी ?

उत्तर – आचार्य पद कुघचित रूपी है। कघचित अरूपी।

प्रश्न ४०– आचार्य पद शाश्वत है। या अशाश्वत ?

उत्तर – एक आचार्य आश्री अशाश्वत है, अनेक आश्री शाश्वत ।

प्रश्न ४१– आचार्य अभवी जीव हो सकता है या नहीं ?

उत्तर – आचार्य दो प्रकार के –द्रव्य आचार्य, भव आचार्य द्रव्य आचार्य अभवी हो सकता है। वह ३६ गुण रहित नाम आचार्य होगा।

प्रश्न ४२– आचार्य महाराज में कर्म कितने पाये जाते है?

उत्तर – ८ ही, आगे साधना से कर्म क्षय करते है। तो ७,६ तथा ४ कर्म हो जाते है।

प्रश्न ४३– आचार्य महाराज कितने कल्पी होते है ?

उत्तर – नव कल्पी होते है।

प्रश्न ४४– आचार्य महाराज में कौनसी कषाय पायी जा सकती है ?

उत्तर – सज्वलन–चतुष्क। सज्वलन क्रोध, मान, माया और लोम।

प्रश्न ४५– आचार्य महाराज सकषायी होते है या अकषायी ?

उत्तर – दोनो ही।

प्रश्न ४६– "आचार्य" किसे कहते है ?

उत्तर – जो पाच आचार का स्वयं पालन करते है और दूसरों से पालन करवाते है उन्हें आचार्य कहते है।

प्रश्न ४७—आचार्य को कितना ज्ञान होते है ?

उत्तर – दो तीन अथवा चार ज्ञान होते है।

प्रश्न ४८—आचार्य किस सघ का नेतृत्व करते है ?

उत्तर – चतुर्विघ सघ का नेतृत्व करते है।

प्रश्न ४९—आचार्य किसके उपासक होते है?

उत्तर – अर्हन्तोपाषक होते है।



उपाध्याय

प्रश्न १ – उपाध्याय किसे कहते है ?

उत्तर – जो अग उपाग स्वय पढते है और अन्य को पढाते है।

प्रश्न २ – उपाध्याय कितने गुणों के धारक है ?

उत्तर – पच्चीस गुणो के ।

प्रश्न ३ – पच्चीस गुण कौन–कौन से है ?

उत्तर – ११ अग, १२ उपाग, चरण सत्तरी, करण सत्तरी।

प्रश्न ४ – चरण सत्तरी, करण सत्तरी किसे कहते है?

उत्तर – साधु जिन नियमों का निरतर सेवन करते है वर चरण गुण और प्रयोजन होने पर जिनका सेवन किया जाता है। वे करण गुण है।

प्रश्न ५ – चरण सत्तरी कौन–कौन से है?

उत्तर – ५ महाव्रत, १० यति धर्म, १७ प्रकार का सयम, १० प्रकार की वैयावृत्य, नव वाड ब्रह्मचर्य, ज्ञान दर्शन–चरित्र की आराधना, १२ प्रकार का तप, ४ कषाय निगृह।

प्रश्न ६ – करण सत्तरी कौन–कौन से है ?

उत्तर – आहार, वस्त्र, पात्र, शय्या की विशुद्ध गवेषणा, पाच समिति, तीन गुप्ति, १२ भावना, १२ प्रतिमायें, ५ इद्रिय निगृह, पच्चीस प्रकार की प्रतिलेखना, चार प्रकार का अभिगृह।

प्रश्न ७ – सारणा, वारणा, धारणा कराने वाला पद कौन सा है ?

उत्तर – उपाध्याय का।

प्रश्न ८ – सारणा, वारणा, धारण का अर्थ क्या है ?

उत्तर – सारणा–अच्छे कार्यों में प्रगति करने की शिक्षा देना।

वारणा– बुरे कार्यो को रोकना या दुष्कर्म को अटकाना।

धारणा–धर्म से स्थिर करना।

प्रश्न ९ – क्या स्त्री उपाध्याय पद पा सकती है ?

उत्तर – स्त्री उपाध्याय पद की अधिकारी नहीं है।

प्रश्न १० –उपाध्याय को क्या कह सकते है ?

उत्तर – शिक्षक।

प्रश्न ११ –अग कितने होते है ?

उत्तर – १२ अग होते है।

प्रश्न १२ –अभी कितने अग उपाग है ?

उत्तर – ११ अग १२ उपाग है।

प्रश्न १३ –११ अग कौन–कौन से है ?

उत्तर – ११ अग– आचाराग, सुयगडाग, स्थानाग, समवायाग, (भगवाती), विवाह प्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्म कथाग, उपासक दशाग, अतगऽदशाग,

अनुत्तरोपात्ति प्रश्न व्याकरण, विपाक सूत्र।

प्रश्न १४– १२ उपाग कौन–कौन से है।

उत्तर – औपपातिक सूत्र, राजप्रश्नीय सुत्र, जीवाभिगम सूत्र, प्रज्ञापना, जम्बूद्वीप पन्नति, चन्द्र प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, निरयावलिका, कल्पवसक्तिका, पुष्पिका, पूष्पपुचुल्लिका, वणिहदसा।

प्रश्न १५– मुल सूत्र कौन से है ?

उत्तर – दशवैकालिक, नदी सूत्र, उत्तराध्ययन, अनुयोग द्वार।

प्रश्न १६– छेद सूत्र कौन से है।

उत्तर – छेद सूत्र ४ है। व्यवहार, वृहतकल्प, निशीघ, दशाश्रुत स्कध।

प्रश्न १७– अभी आगम कितने है ?

उत्तर – ३२– ११ अग १२ उपाग, ४ मूल सूत्र, ४ छेद सूत्र, १ आवश्यक सूत्र।

प्रश्न १८– उपाध्याय क्या सभी आने वाले को अध्ययन कराते है।

उत्तर – नहीं।

प्रश्न १९– क्यों नहीं कराते ?

उत्तर – पात्रता को देखकर अध्ययन कराते है। अपात्र का नहीं।

प्रश्न २०– पात्र कौन, अपात्र कौन ?

उत्तर – क्रोधी, मानी, रोगी, आलसी, प्रमादी, अविनीत, दुध दही आदि विगय में आसक्त और जो मायावी होवे वे अपात्र है। इसके प्रतिपक्षी गुणी पात्र है।

प्रश्न २१– उपाध्याय पद किसे दिया जाता है ?

उत्तर – दीक्षा व उम्र मे बड़ा हो या छोटा सत हो यदि विद्याभ्यास अच्छा है। जिनशासन की रक्षार्थ वाद विवाद में निपुण हो।

प्रश्न २२ –उपाध्याय के गुरू कौन होते है ?

उत्तर – आचार्य/महाराज।

प्रश्न २३– उपाध्याय के अन्य नाम बताइये ?

उत्तर – श्रुतधर, सुबुद्ध, शिक्षक, पाठक, बहुश्रुत, चित्तप्रभुत्त।

प्रश्न २४– उपाध्याय पद कौन प्रदान करता है ?

उत्तर – आचार्य देव, योग्य सत का चयन कर चतुर्विध सघ के समक्ष उनके नाम की घोषणा करते है। उपाध्याय पद पर स्थापित करते है।

प्रश्न २५– उपाध्याय तीनों लोक में कहा पर है ?

उत्तर – अधोलोक, तिर्यक लोक में।

प्रश्न २६ –उपाध्याय की गति कौन सी है ?

उत्तर – मोक्ष या देवलोक।

प्रश्न २७– कितने भव अधिक से अधिक करते है ?

उत्तर – उपाध्याय ज्यादा से ज्यादा तीसरे भव मोक्षगामी बन जाते है।



साधु

प्रश्न १ — साधु किसे कहते है ?

उत्तर — जो स्व पर को साधे अर्थात जो अपना और दूसरो का कल्याण करता है। साधु कहलाता है। अथवा सा=साधना की "धू" धुन में रहे वह साधु कहलाता है।

प्रश्न २ — साधु में कितने गुण पाये जाते है ?

उत्तर — २७ गुण।

प्रश्न ३ — सत्तईस गुण कौन—कौन से है ?

उत्तर — पाच महाव्रत पाले, पाच इद्रिय जीते, चार कुषाय टाले, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावन्त, वैराग्यवत, मन समाधारणया, वय समाधारणया, काय समाधारणया नाण सपन्नाय, दसण सपन्नया चरित्त

सपन्नया वेदनीय समा अहियासणया, मरणातिय समा अहियासणया ये कुल २७ गुण है।

प्रश्न ४ – क्रम से क्रम कितने साधु होते है?

उत्तर – २००० करोड़।

प्रश्न ५ – अधिक से अधिक कितने साधु होते है?

उत्तर – नव हजार करोड।

प्रश्न ६ – साधु जैन ही हो सकते है या अन्य भी?

उत्तर – किसी भी जाति के मनुष्य साधु हो सकते है।

प्रश्न ७ – क्या साधु पूरे लोक में पाये जाते है।

उत्तर – केवली समुद्रघात की अपेक्षा पूरे लोक में साधु पाये जाते है।

प्रश्न ८ – साधु मे कितने ज्ञान पाये जा सकते है?

उत्तर — पाचो ज्ञान।

प्रश्न ६ — साधु की गति क्या है ?

उत्तर — मोक्ष या देवलोक

प्रश्न १०— साधु में कितने गुणस्थान होते है ?

उत्तर — छठवे गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक ६ गुणस्थान है।

प्रश्न ११— साधु मे कितने दडक है ?

उत्तर — १ दडक है।

प्रश्न १२— साधु की स्थिति कितनी है?

उत्तर — जघन्य १ समय उत्कृष्ट देशोज करोड पूर्व।

प्रश्न १३— साधु की अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर — जघन्य २ हाथ उत्कृष्ट ५०० धनुष की।

प्रश्न १४ —२४ तीर्थकरो के साधु की विशेषता क्या है ?

उत्तर — प्रथम तीर्थकर के साधु सरल और जड़ होते है। मध्य के २२ तीर्थकरों

के साधु सरल और बुद्धिशाली और अतिम तीर्थकर के साधु वक्र और जड होते है।

प्रश्न १५ —साधु के उपकरण क्या है जिससे उसे पहचाना जाय ?

उत्तर — मुख पर मुख वस्त्रिका, हाथ मे रजोहरण, शरीर पर चद्दर, पहनने को चोल पटक, पात्र आदि मुनि के चिन्ह है।

प्रश्न १६ —मुख वस्त्रिका का प्रमाण क्या है?

उत्तर — सौलह अगुल चोडी, इक्कीस अगुल लबी, आठ पट वाली होती है।

प्रश्न १७ —साधु एक स्थान मे अधिक से अधिक कितने समय तक रह सकता है?

उत्तर — चार्तुमास मे चार माह तक।

प्रश्न १८ —साधु कितने हाथ कपडा रख सकता है?

उत्तर – ७२ हाथ।

प्रश्न १६ –साध्वी कितने हाथ कपड़ा रख सकती है?

उत्तर – ६६ हाथ।

प्रश्न २० –साधु एक स्थान पर चातुर्मास के अतिरिक्त कितने काल तक रह सकते है?

उत्तर – साधु २६ दिन, साध्वी ५८ दिन।

प्रश्न २१ –२६ दिन रह जाने के बाद पुन उसी क्षेत्र को कब पूरण सकते है?

उत्तर – ५८ दिन अन्य स्थान पर रह जाने के बाद।

प्रश्न २२ –जिस क्षेत्र में चातुर्मास किया है। वहा। पुन कब चार्तुमास करने का कल्प है ?

उत्तर – दो चार्तुमास अन्य स्थान पर करने के बाद।

प्रश्न २३ —कम से कम कितने साधु साध्वी को एक साथ रहना आवश्यक है?

उत्तर — दो साधु, तीन साध्वियो को एक साथ रहना आवश्यक है।

प्रश्न २४— व्रत क्या ?

उत्तर — व्रत पुण्य भी है। धर्म भी है। व्रत मे काया की प्रवृति पुण्य है और व्रत के भावो की जागृति धर्म है।

प्रश्न २५— कितने प्रकार के पात्र साधु रख सकता है?

उत्तर — तीन प्रकार के—लकडी, तुम्बी, मिट्टी के।

प्रश्न २६— किस कारण से साधु साध्वी वस्त्र धारण करते है ?

उत्तर — लज्जा से, धर्म की निन्दा न हो, शीतादी परिषह के कारण

प्रश्न २७— साधु साध्वी के परिषह कितने है?

उत्तर — बाईस।

प्रश्न २८— साधु सेवक है या स्वामी ?

उत्तर — अरिहत और सिद्ध की अपेक्षा साधु सेवक है। आचार्य उपाध्याय से साधु दीक्षा पर्याय मे बडे होते हुए भी उनकी आज्ञा मे चलने से साधु सेवक है। साधु मे भी जो दीक्षा पयार्य मे बडे हे वे स्वामी ओर छाटे है वे सेवक है।

प्रश्न २९— साधु को नींद आती है या नहीं ?

उत्तर — प्रमाद अवस्था मे आती है।

प्रश्न ३०— साधु स्वलिग मे होते है या अन्य लिग मे?

उत्तर — द्रव्य की अपेक्षा दोनों मे भाव की अपेक्षा स्वलिग मे।

प्रश्न ३१— साधु का अपर नाम क्या है?

उत्तर — भिक्षु, निर्ग्रन्थ, मुनि सत स्वामी ऋषि

श्रमण, माहण, अणगार, यति, सर्व विरती, महत्रृषि।

प्रश्न ३२– साध्वी के अपर नाम क्या है?

उत्तर – आर्या, निर्ग्रन्यणी, भिक्षुणी, महासति, श्रमणी।

प्रश्न ३३– क्या साधु ससारी है?

उत्तर – नव प्रकार का ब्राह्य परिग्रह त्याग करके साधु बनता है फिर भी मनुष्य गति मे होने से तथा आठ कर्म युक्त सशरीरी होने से ससारी है।

प्रश्न ३४– साधु का पद शाश्वत है या अशाश्वत ?

उत्तर – महाविदेह की अपेक्षा शाश्वत एव भरत, एरवत क्षेत्र की अपेक्षा अशाश्वत।

प्रश्न ३५– साधु को स्वप्न आते है या नहीं ?

उत्तर – प्रमाद अवस्था में आते है।

प्रश्न ३६– पाचवे पद मे "सव्व" शब्द का प्रयोग

क्यों किया ?

उत्तर – (१) साधु की साधना की न्यूना–धिकता के कारण।

(२) पुण्य और तप से उत्पन्न लब्धियों के कारण।

(३) अलग–अलग कल्प के कारण।

(४) काल और क्षेत्र के कारण।

इस प्रकार साधु की विभिन्नता को एक ही पद में समाहित करने के लिए सव्व शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न ३७– साधु कितने लोक में पाये जाते है ?

उत्तर – जन्म व सदभाव की अपेक्षा तिर्यक लोक व अधोलोक में। सहरण की अपेक्षा तीनों लोक में।

प्रश्न ३८– साधुता की बाहरी पहचान क्या है ?

उत्तर – ईर्या, भाषा, एषणा, अर्थात गमनागमन,

बोलचाल तथा (आहार करना) इनमें विवेक से साधुता पहचानी जाती है। भाव साधुता केवली गम्य है।

प्रश्न ३९– दीक्षा का अर्थ क्या है ?

उत्तर – (१) महाव्रतों को स्वीकारना
(२) सत्य की खोज करना
(३) अष्टकर्म से मुक्ति हेतु प्रयास
(४) दीन की रक्षा के लिए की गई प्रतिज्ञा दीक्षा है।

प्रश्न ४०– दीक्षा शब्द के आगे "भागवती" शब्द का प्रयोग क्यो किया जाता है ?

उत्तर – (१) भागवती शब्द पूज्यता का द्योतक है । (२) दीक्षा की आराधना स्वय भगवान से आराधित है। ईष्ट भाव दिखाने के लिए दीक्षा के आगे भागवती विशेषण लगाया जाता है।

प्रश्न ४१ –क्या दीक्षा के बिना मुक्ति नहीं है ?

उत्तर – दीक्षा के बिना तीन काल में भी मुक्ति नहीं है। अल्प आयुष्य के कारण द्रव्य दीक्षा नहीं भी ले सके पर भाव दीक्षा (सर्व विरति) के बिना कोई जीव मोक्ष नहीं जा सकता।

प्रश्न ४२– दीक्षा लेते है तब कौनसा चारित्र होता है ?

उत्तर – सामायिक चारित्र।

प्रश्न ४३– बडी दीक्षा लेते वक्त कौन स चारित्र होता है?

उत्तर – छेदोपस्थापनीय चरित्र।

प्रश्न ४४– बडी दीक्षा किस पाठ से ली जाती है ?

उत्तर – दशवैकालिक के चौथे अध्याय छज्जीवनिकाय से।

प्रश्न ४५– बडी दीक्षा कब दी जाती है ?

उत्तर – जघन्य ७ दिन मध्यम ४ माह, उत्कृष्ट ६ माह।

प्रश्न ४६– स्थविर साधु कितने प्रकार के होते है ?

उत्तर – तीन प्रकार के– वयस्थविर, श्रुतस्थविर, पर्याय स्थवीर।

प्रश्न ४७– वय स्थिविर किसे कहते है ?

उत्तर – साठ वर्ष की उम्र बाले वय स्थिविर है।

प्रश्न ४८– सुत्र स्थिविर कौन है ?

उत्तर – आचाराग, निशीध, गणाग, समवायाग सूत्रो का ज्ञाता सूत्र स्थिविर है।

प्रश्न ४९– पर्याय स्थिविर कौन है ?

उत्तर – बीस वर्ष की दीक्षा वाला साधु पर्याय स्थिविर है।

प्रश्न ५०– साधु कितने कोटि से महाव्रत पालते है ?

उत्तर – नव कोटि।

प्रश्न ५१ –नव कोटि का अर्थ क्या है ?

उत्तर – कोटि का अर्थ है करण और योग का गुणाकार करने पर जो पुल आता है। उस अक को कोटि कहते है।

प्रश्न ५२– साधु स्थावर तीर्थ है या सगम तीर्थ।

उत्तर – साधु सगम तीर्थ है। हलन चलन करे वह जगम कहलाता है।

प्रश्न ५३– साधु छ काया में कौन सी काया है। नाम व जाति क्या है ?

उत्तर – साधु त्रसकाय, जगम नाम, जाति पचेन्द्रिय है।



सामायिक के प्रकार

प्रश्न १ – सामायिक का क्या अर्थ है?

उत्तर – सममाव की प्राप्ति (सममाव की आय)।

प्रश्न २ – सामायिक का काल कितना है ?

उत्तर – सामायिक का काल ४८ मिनट का है।

प्रश्न ३ – सामायिक कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर – सामायिक दो प्रकार की एव चार प्रकार की होती है। दो प्रकार की द्रव्य और भाव। चार प्रकार की –सम्यक्तव, सामायिक, श्रुत सामायिक, देशविरति सामायिक, सर्वविरति सामायिक।

प्रश्न ४ – कौन गुणस्थान से सामायिक की साधना की जाती है ?

उत्तर – ५ वे से १४ वे गुणस्थान तक सामायिक की साधना की जाती है।

प्रश्न ५ – मोक्ष मे विराजित आत्मा सामायिक में रहती है। या नहीं?

उत्तर – सामायिक का अर्थ समभाव होने से मोक्ष मे विराजित आत्माए सदैव समभाव मे रहती है। अत वे सदैव सामायिक मे रहते है ।

प्रश्न ६ – सामायिक में कौन से योगो का त्याग किया जाता है ?

उत्तर – सामायिक में सावद्य योगों का त्याग किया जाता है।

प्रश्न ७ – सामायिक में गुरु को आगम की भाषा मे किस शब्द सबोधित किया जाता है ?

उत्तर – सामायिक मे गुरु को आगम की भाषा में "भते" शब्द से सबोधित किया जाता है।

प्रश्न ८ – साधु और श्रावक की सामायिक को

किस नाम से पूकारा जाता है ?

उत्तर – साधु को यावत्कधिक और श्रावक की इत्वरकालिक सामायिक के नाम से पूकारा जाता है।

प्रश्न ९ – किस कर्म के उदय से देवता सामायिक की आराधना नहीं कर सकते है ?

उत्तर – चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से देवता सामायिक की आराधना नहीं कर सकते है।

प्रश्न १० –सामायिक मे किस पाठ से व्यक्ति को अह को छोडकर नम्र बनने की प्रेरणा मिलती है ?

उत्तर – गुरुवदना की पाटी से (तिक्खुतो) व्यक्ति को अह छोडकर नम्र बनने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न ११ –सामायिक मे मन, वचन, काया के

कितने दोष है ?

उत्तर — सामायिक मे मन के १०, वचन के १०, काया के १२ दोष है ?

प्रश्न १२ —सामायिक की पाटी में अरिहत की उपना कहाँ है ?

उत्तर — सामायिक की पाटीयों में लोगस्स एव णमो त्थुण में अरिहत की उपमा है।

प्रश्न १३ —लोगस्स और णमोत्थुण में क्या अतर है ?

उत्तर — *लोगस्स में नाम स्तुति और णमोत्थुण* में गुण स्तुति यही दोनो मे अतर है।

प्रश्न १४ —"खुदा मुझ पर खुश होवे" यह भाव कौन से पाठ मे आया है?

उत्तर — "खुदा मुझ पर खुश होवें" यह भाव लोगस्स के पाठ मे आया हे। "तित्थयरा मे पसीयन्तु"

प्रश्न १५ —ध्यान के प्रमुख आगार कितने होते है ?

उत्तर — ध्यान के प्रमुख आगार १२ होते है

(१) उससिएण (२) निससीएण (३) स्वसिएण (४) छिएण (५) जभाइएण (६) उडडुएण (७) वायनिसगेण (८) भमलीए (९) पित्तमुच्छाए (१०) सुहुमेहिं अगसचालेहि (११) सुहुमेहि खेल सचालेहिं (१२)सुहुमेहिं दिट्ठि सचालेहि

प्रश्न १६ –विराधना कितने प्रकार की होती है और कौन–कौन सी है ?

उत्तर – विराधना १० प्रकार की होती है (१) अभिहया (२) वत्तिया (३) लेसिया (४) सघाइया (५)सघट्टिया (६) परियाविया (७) किलामिया (८) उद्धविया (९) ठाणाओ ठाण सकामिया (१०) जीवियो वरोविया।

प्रश्न १७ –सामायिक की पाटी में जीवदया का पाठ कौन सा है ?

उत्तर – सामायिक की पाटी में जीवदया का

पाठ इच्छकारेण है।

प्रश्न १८ –पाप के कितने सोपान है, और कौन–कौन से ?

उत्तर – पाप के चार सोपान है (१) अतिक्रम (२) व्यतिक्रम (३) अतिचार (४) अनाचार

प्रश्न १९ –सामायिक मे १८ पाप ८ कर्म का समावेश कहाँ होता है ?

उत्तर – सामायिक में १८ पाप ८ कर्म का समावेश तस्स उत्तरी के पाठ में होता है (पावाण कम्माण)

प्रश्न २० –सामायिक मे पाप छोड़ने का एक शब्द कौनसा है ?

उत्तर – सामायिक मे पाप छोडने का एक शब्द "वोसिरामि" है।

प्रश्न २१ –प्राणी मात्र के प्रति मेत्री की अभिव्यक्ति कौन सी पाटी से होती है।

उत्तर — प्राणी मात्र के प्रति मैत्री की अभिव्यक्ति इच्छाकारेण के पाठ से होती है।

प्रश्न २२— नमोत्थुण मे किनकी स्तुति की गई है ?

उत्तर — नमोत्थुणमें अरिहत व सिद्धों की स्तुति की गयी ।

प्रश्न २३— श्रावक के व्रत में ऐसा कौन सा व्रत है। जिसमें सभी व्रतो का समावेश किया जाता है?

उत्तर — सामायिक व्रत मे।

प्रश्न २४— सामायिक में ताला व चाबी का पाठ कौन सा है?

उत्तर — सामायिक मे ताया की पारी करेमि भते और चाबी की पाटी "एयस्स नवमस्स" है।

प्रश्न २५— नमोत्थुण का दुसरा नाम क्या है ?

उत्तर — शकस्तव।

प्रश्न २६— नमोक्कार मत्र का दूसरा नाम क्या है
उत्तर — नमस्कार मत्र।
प्रश्न २७— तिक्खुतो का दुसरा नाम क्या ?
उत्तर — गुरुवदन सुत्र।
प्रश्न २८— इरियावहिय का दूसरा नाम क्या है?
उत्तर — आलोचना सुत्र।
प्रश्न २९— तस्स उत्तरी का दुसरा नाम क्या है ?
उत्तर — उत्तरीकरण सुत्र ।
प्रश्न ३० —लोगस्स का दुसरा नाम क्या है?
उत्तर — चर्तुविशतिस्तव।
प्रश्न ३१ —करेमिमते का दुसरा नाम क्या है?
उत्तर — सामायिक प्रतिज्ञा सुत्र।
प्रश्न ३२ —नवमस्स सामाइयं का दुसरा नाम क्या है?
उत्तर — सामायिक सूत्र।
प्रश्न ३३ —सामायिक व्रत किस कारण से दुषित होता ?

उत्तर – अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार।

प्रश्न ३४– सामायिक एवं सामायिक आवश्यक में क्या अतर है ?

उत्तर – नवमे व्रत की पालना।

प्रश्न ३५– साधु की सामायिक कितनी कोटि की होती है ?

उत्तर – ६ कोटि की (३ करण ३ योग)

प्रश्न ३६– श्रावक की सामायिक कितने कोटि की होती है–७ कोटि की (२ करण ३ योग)

प्रश्न ३७– क्या सामायिक आहारादी कर सकते है ?

उत्तर – हाँ कर सकते है। सिर्फ जावज्जीवन की सामायिक में।

प्रश्न ३८– सामायिक के पाठ में अरिहंत को वदन पहले और पीछे किस पाठ में किया गया है?

उत्तर – नमोत्थुण व नमस्कार मंत्र।

प्रश्न ३६– सामायिक जीव है या अजीव।

उत्तर – दोनो नहीं है भाव है और वैसे सामायिक आत्मा का गुण होने से जीव है।

प्रश्न ४०– सामायिक करना कौन सा तत्व है ?

उत्तर – संवर तत्व।

प्रश्न ४१ –सामायिक ४६ भागो में से कौन से भांगों से की जाती है ?

उत्तर – ४० वें एव ४६ वे भागों से दो करण ३ योग एवं ३ करण ३ योग से की जाती है।

प्रश्न ४२– सामायिक किस काल में की जाती है?

उत्तर – हर समय की जा सकती है।

प्रश्न ४३ –सामायिक क्या है ?

उत्तर – आत्मा ही सामायिक है। आत्मा ही सामायिक का अर्थ है।

प्रश्न ४४– उपरोक्त प्रश्न किसने किससे पुछा?
उत्तर – भगवती सुत्र में कालास्यावेषी अनगार ने स्थिविरों से (महावीर स्वामी के)

प्रश्न ४५ – सामायिक शाश्वत है या अशाश्वत ?
उत्तर – शाश्वत है। महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा से।

प्रश्न ४६– सामायिक किस–किस आरे मे होती है ?
उत्तर – अवसर्पिणी काल के ३,४,५ आरे में ओर उत्सर्पिणी काल के २,३,४ आरे मे व्रती अपेक्षा से। सम्यक्तव सामायिक की अपेक्षा ६ आरों में पली जाती है।

प्रश्न ४७– सामायिक का क्षेत्र कितना है ?
उत्तर – सपूर्ण लोक। केवली समुदघात की अपेक्षा ।

प्रश्न ४८– सामायिक कितने गति वाले कर

सकते है ?

उत्तर — मनुष्य एवं तिर्यंच गति वाले।

प्रश्न ४९— किस जाति वाले सामायिक कर सकते है।

उत्तर — पचेन्द्रिय जाति वाले।

प्रश्न ५०— सामायिक किस काया वाले कर सकते है ?

उत्तर — त्रस काया वाले।

प्रश्न ५१— सामायिक करने वाले के दण्डक कितने ?

उत्तर — दो दण्डक (मनुष्य, तिर्यंच)

प्रश्न ५२— सामायिक में लेश्या पावे ?

उत्तर — ६ ही (कृ. नी.का.ते.प.शु.)

प्रश्न ५३— सामायिक किस योग वाले कर सकते है?

उत्तर — १४ (कार्मण को छोड़कर)

प्रश्न ५४— सामायिक किस वेद वाले कर

सकते है?

उत्तर – ३ (स्त्री, पुरुष, नपुसक)

प्रश्न ५५– सामायिक किस समकित वोले कर सकते है ?

उत्तर – ४ (उपशय, क्षायिक, क्षयोपशक, वेदक)

पश्न ५६– ण्मोत्थुण का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर – शक्र स्तव, प्राणियात सूत्र।



प्रतिक्रमण के प्रश्नोत्तर

प्रश्न १ — प्रतिक्रमण का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर — प्रतिक्रमण शाब्दिक अर्थ है, पापों से पीछे हटना।

प्रश्न २ — प्रतिक्रमण का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण का दूसरा नाम आवश्यक सुत्र है।

प्रश्न ३ — प्रतिक्रमण कितने प्रकार का है?

उत्तर — प्रतिक्रमण ८ प्रकार का है (१) प्रतिक्रमण (२) प्रतिचरण (३) प्रतिहरण (४) वारणा (५) निवृति (६) निंदा (७) गर्हा (८) शुद्धि

प्रश्न ४ — प्रतिक्रमण का सार कौन से पाठ में है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण का सार इच्छामि ठामि में है।

प्रश्न ५ – प्रतिक्रमण में शक्ति और भक्ति के आवश्यक कितने ?

उत्तर – प्रतिक्रमण में ३ आवश्यक शक्ति के है। सामायिक, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान। और भक्ति के ३ आवश्यक है–चर्तुविंशति, वदना और काउसग्ग।

प्रश्न ६ – प्रतिक्रमण में विटामिन की पाटी कौन सी है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण में विटामिन की पाटी चतुर्थ अणुव्रत है।

प्रश्न ७ – प्रतिक्रमण में श्रुत का पाठ कौन से पाठ मे है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण मे श्रुत का पाठ "आगमे तिविहे" है।

प्रश्न ८ – प्रतिक्रमण में पाप के सोपान कितने है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण मे पाप के सोपान

है—अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार।

प्रश्न ९ — प्रतिक्रमण में तिराने वाली व डुबोने वाली पाटी कौन सी है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण मे तिराने वाली पाटी अरिहतो महादेवों और डुबोने वाली पाटी १८ पाप है।

प्रश्न १० —प्रतिक्रमण मे स्कूटर प्लेन कहा आया है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण में स्कूटर प्लेन सातवें व्रत में आया है। वाहण विहिं।

प्रश्न ११ —प्रतिक्रमण में सौफ सुपारी इलायची किस पाठ में आया है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण में सौंफ सुपारी इलायची पाठ सावते अणुव्रत मे आया है मुखवासविही।

प्रश्न १२ —प्रतिक्रमण में यावज्जीवन के व्रत

कितने है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण मे यावतजीवन के व्रत एक से आठ है।

प्रश्न १३ –प्रतिक्रमण में ससार जाल का पाठ कौनसा है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण में ससार जाल का पाठ ८४ लाख जीव योनि है।

प्रश्न १४ –प्रतिक्रमण में मैत्री सुत्र का पाठ कौन सा है ?

उत्तर – प्रतिक्रमण में मैत्री सुत्र का पाठ "खामेमि सव्वे जीवा" है।

प्रश्न १५ –प्रतिक्रमण में छ आवश्यक मे से कौन–कौन से आवश्यक किस–किस काल के है ?

उत्तर - सामायिक चतुर्विंशति स्तवन वदना, काउसग्ग, वर्तमान काल के है प्रतिक्रमण भूतकाल के और

प्रत्याख्यान भविष्यत काल के है।

प्रश्न १६ –प्रतिक्रमण के ६ आवश्यक मे किस आचार की शुद्धि होती है ?

उत्तर – सामायिक प्रतिक्रमण काउसग्ग से चरित्राचार, चर्तुर्विशति से दर्शनाचार की, वदना आवश्यक से ज्ञान दर्शन चारित्राचार की, प्रत्याख्यान से तपाचार की, इन छ आवश्यक में प्रवृति करने से वीर्याचार की शुद्धि होती है।

प्रश्न १७ –प्रतिक्रमण में इच्छामि ठामि के पाठ में श्रावक के व्रतों का प्रतिनिधित्व करने वाला कौनसा शब्द है?

उत्तर – प्रतिक्रमण में इच्छामि ठानि के पाठ में क्षावक के व्रतों का प्रतिनिधित्व करने वाला शब्द पचण्हमणुव्वयाण, तिण्ह गुणव्याण, चउण्ह सिक्खावयाण है।

प्रश्न १८ –प्रतिक्रमण के छह आवश्यक मे से हॉस्पीटल, डॉक्टर, ऑपरेशन, ड्रेसिग, औषध एव पथ्य का आवश्यक कौनसा है ?

उत्तर – सामायिक आवश्यक हॉस्पिटल चउवीसत्पव आवश्यक डाक्टर। वदना आवश्यक ऑपरेशन। प्रतिक्रमण आवश्यक ड्रेसिग। काउसग्ग आवश्यक–औषध। तथा प्रत्याख्यात आवश्यक–पथ्य। इनको एक देशीय रूप से समझना।

प्रश्न १६ –करेमि भते के पाठ मे छह आवश्क बतलाइए ?

उत्तर – समाइय–सामायिक आवश्यक, भन्ते–चउवीसथव, आवश्यक पज्जुवासामि–वदना आवश्यक पडिक्कमामि–पतिक्रमण आवश्यक

अप्पाण वोसिरामि–काउसग्ग आवश्यक पच्चक्खामि–प्रत्याख्यात आवश्यक।

प्रश्न २० –श्रावक प्रतिक्रमण के कितने अति–चार है ?

उत्तर – ६६ अतिचार है।

प्रश्न २१ –श्रावक प्रतिक्रमण में ज्ञान दर्शन चारित्र और तप के कितने अति–चार है ?

उत्तर – १४ ज्ञान के, ५ दर्शन, ७५ चारित्र और तप के ५ अतिचार है।

प्रश्न २२ –प्रतिक्रमण को आवश्यक क्यों कहा गया है?

उत्तर – जो मोधामिलाषी के द्वारा अवश्य करने योग्य हो उसे आवश्यक कहते है।

प्रश्न २३ –आवश्यक के कितने नाम हैं ?

उत्तर – (१) आवश्यक (२) आवश्यकरणीय

(३) ध्रुव (४) निग्रह (५) विशुद्धि (६) वर्ग (७) षडाध्ययत (८) न्याय (९) आराधना (१०) मार्ग।

प्रश्न २४— पाप का प्रायश्चित देने वाला कोर्ट कौनसा है ?

उत्तर — पाप का प्रायश्चित देने वाला कोर्ट प्रतिक्रमण है।

प्रश्न २५— काल की दृष्टि से प्रतिक्रमण कितने प्रकार है?

उत्तर — भद्रबाहु स्वामी ने काल दृष्टि से प्रतिक्रमण के तीन भेद किये है—(१) अतीतकाल का प्रतिक्रमण (२) वर्तमान का प्रतिक्रमण (३) अनागत काल का प्रतिक्रमण।

प्रश्न २६ —पाप धोने का वाशिग पाउडर क्या है

उत्तर — प्रतिक्रमण।

प्रश्न २७— अतीत काल का प्रतिक्रमण किसे

कहते है ?

उत्तर – भूतकाल मे लगे हुए दोषो की आलोचना करना।

प्रश्न २८– वर्तमान काल का प्रतिक्रमण किसे कहते है?

उत्तर – वर्तमान काल में लगे हुए दोषों का सवर करना।

प्रश्न २९– भविष्यकाल का प्रतिक्रमण किसे कहते है ?

उत्तर – भविष्य में लगने वाले दोषो का प्रत्याख्यान करना।

प्रश्न ३०– विशेष काल की अपेक्षा से प्रतिक्रमण के कितने भेद है ?

उत्तर – देवसी प्रतिक्रमण, रायसी प्रतिक्रमण, पाक्षिक प्रतिक्रमण, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण और संवत्सरी प्रतिक्रमण।

प्रश्न ३१ –प्रतिक्रमण किसका किया जाता है?

उत्तर – दोषों का।

प्रश्न ३२ –दोष कितने है ?

उत्तर – ५ मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय, प्रमाद और अशुभ योग।

प्रश्न ३३– प्रायश्चित कितने गुणस्थान तक लिया जाता है ?

उत्तर – ७ वें गुणस्थानतक।

प्रश्न ३४– मिच्छामि दुक्कड़ का तत्पर्य क्या क्या है ?

उत्तर – मि–मृदुता पूर्वकम छ दोषे को छोड़कर मि–चारित्र की मर्यादा में रहकर दु–दुःख देने वाले, क–पाप कर्म का उ–उल्लघन करता हू।

प्रश्न ३५– प्रतिक्रमण में अहोरात्रि के कितने व्रत है?

उत्तर – प्रतिक्रमण में अहोरात्रि के २ व्रत है १० वा, ११ वा।

उत्तर — छेदोपस्थानीय एव परिहार विशुद्धि चारित्र वाले नियमित रूप से प्रतिक्रमण करते है।

प्रश्न ४४— प्रतिक्रमण नियमित रूप से कितने कर्मभूमि वाले करते हैं?

उत्तर — प्रतिक्रमण नियमित रूप से ५ भरत एव ५ ऐरावत क्षेत्रवाले करते है।

प्रश्न ४५— प्रतिक्रमण कौन से आगम से उद्धृत किया गया है ?

उत्तर — आवश्यक सूत्र से उद्धृत किया गया है।

प्रश्न ४६— प्रतिक्रमण से धर्म होता है या पुण्य ?

उत्तर — प्रतिक्रमण से धर्म होता है, पुण्य नहीं।

प्रश्न ४७— प्रतिक्रमण के कितने भेद है ?

उत्तर — ६ भेद है

(१) *उच्चार प्रतिक्रमण* —उपयोग

पूर्व बडीनीत करने के बाद ईया प्रतिक्रमण करना

(२) *प्रश्रवण प्रतिक्रमण*– उपयोग लघु नीत करने के बाद

(३) *उत्वरकालिक प्रतिक्रमण* –देवसी रायी आदि स्वल्प कालिन प्रतिक्रमण करना।

(४) *यावत्कथित प्रतिक्रमण*–जीवन पर्यन्त हिसादि पापो का प्रतिक्रमण करना।

(५) *यात्किञ्चित प्रतिक्रमण*– प्रमादवश असयम रूप में कोई आचारण हो जाय तो अपनी भूल स्वीकार करते हुए मिच्छामि दुक्कड देना।

(६) *स्वप्नातिक प्रतिक्रमण*–सोकर उठने पर किया जाने वाला

प्रतिक्रमण अथवा विकार वासना का कुस्वप्न देखने पर उसका प्रतिक्रमण करना।

प्रश्न ४८— देवसी प्रतिक्रमण सर्वप्रथम क्यों ?

उत्तर — प्रत्येक तीर्थकर केवल ज्ञान प्राप्त करके उपदेश देकर चतुर्विध सघ की स्थापना करते है, तीर्थ की स्थापना दिन में ही होती है यह नियम है। जो साधु साध्वी श्रावक—श्राविका बने है वे दिवस संबधि दोषों की आलोचना उसी दिवस के अत में करते है अत ५ प्रतिक्रमण में सबसे पहले देवसी प्रतिक्रमण का विधान है।

प्रश्न ४६ —प्रतिक्रमण का द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव बताइये?

उत्तर — द्रव्य से—शुद्ध उच्चारण करना। क्षेत्र

से– विधी से उठना, बैठना (त्रसनाल) काल से – कालोकाल प्रतिक्रमण करना। भाव से – उपयोग पूर्वक करना।

प्रश्न ५०– कितनी गति वाले प्रतिक्रमण कर सकते है ?

उत्तर – दो गति वाले, तिर्यच एव मनुष्य गति वाले।

प्रश्न ५१ –कितनी इन्द्रिय वाले प्रतिक्रमण कर सकते है ?

उत्तर – पाच इन्द्रिय वाले।

प्रश्न ५२– कौनसी काया वाले प्रतिक्रमण कर सकते है ?

उत्तर – त्रसकाया वाले।

प्रश्न ५३– प्रतिक्रमण में पाप को वोसिराने वाला शब्द कौन सा है ?

उत्तर – मिच्छामि दुक्कड । वोसिरामि।

प्रश्न ५४— प्रतिक्रमण के रचियता कौन हैं ?
उत्तर — तीर्थंकर भगवान।
प्रश्न ५५— अन्य धर्मी का ठाठ देखकर उसकी इच्छा करना अतिचार है यह कौन से पाठ में बताया गया है ?
उत्तर — दसण समकित के पाठ में।
प्रश्न ५६— मिच्छामि दुक्कडं कितने प्रकार का है ?
उत्तर — १८ लाख २४ हजार १२० प्रकार का।
प्रश्न ५७— चातुर्मासिक प्रतिक्रमण वर्ष में कितनी बार करते है ?
उत्तर — तीन बार। कार्तिक शुक्ला पक्खी, फाल्गुन शुक्ला पक्खी, आषाढ़ शुक्ला पक्खी।
प्रश्न ५८— प्रतिक्रमण का प्रारम्भ कब से हुआ ?
उत्तर — जैन धर्म अनादि काल से है धर्म के साथ श्रावक, श्राविका, साधु–साध्वी

और उसके साथ प्रतिक्रमण भी चल रहा है।

प्रश्न ५९— वर्ष में एक बार प्रतिक्रमण कौनसा एव कब किया जाता है ?

उत्तर — सावत्सरिक प्रतिक्रमण। यह प्रतिक्रमण चातुर्मास लगने के ५० वें दिन किया जाता है।

प्रश्न ६०— प्रतिक्रमण कौनसे तत्व में है ?

उत्तर — निर्जरा तत्व में।

प्रश्न ६१— प्रतिक्रमण में हीरे का हार कौनसे पाठ में आता है ?

उत्तर — ७ वे व्रत में (आभरण विहि)

प्रश्न ६२— श्रावक तीन करण, तीन योग से प्रत्याख्यान कब करता है ?

उत्तर — जब सथारा लेता है।

प्रश्न ६३— होली लगाना कौनसे व्रत का अति-चार है ?

उत्तर – प्रथम व्रत का।

प्रश्न ६४– अप्रेल फुल मनाने की मजाक कौनसे व्रत मे अतिचार लगाती है?

उत्तर – ८ वें अनर्थदण्ड व्रत में।

प्रश्न ६५– बिना कारण लाइट, पखा, चालू रखने से किसमें दोष लगता है ?

उत्तर – ८ वें अनर्थदण्ड व्रत में।

प्रश्न ६६– एक कोटी वाला व्रत कौनसा है ?

उत्तर – चौथा व्रत ।

प्रश्न ६७– तीन कोटी के व्रत कौनसे है ?

उत्तर – पांचवा, सातवा, दसवा।

प्रश्न ६८– छ कोटी के व्रत कौन–कौन से है ?

उत्तर – १, २, ३, ४, ६, १०, ११ वां व्रत।

प्रश्न ६९ –नवकोटी का व्रत कौनसा है ?

उत्तर – सथारा।

प्रश्न ७०– बिना करण, कोटी का व्रत कौनसा है ?

उत्तर – १२ वा व्रत ।

प्रश्न ७१– १२ व्रत के मुख्य भेद कितने ?
उत्तर – ३, ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत।
प्रश्न ७२– अठारवे पाप को बड़ा पाप क्यों कहा ?
उत्तर – मिथ्यात्व के त्याग बिना शेष त्याग समव नहीं है।
प्रश्न ७३– चुगली करना कौनसा पाप है ?
उत्तर – "पैशुन्य"।
प्रश्न ७४– किसी पर गलत आरोप लगना कौनसा पाप है?
उत्तर – "अभ्याख्यान"।
प्रश्न ७५– "पद–परिवाद" का क्या अर्थ है ?
उत्तर – दूसरो की निदा करना



श्रमण-प्रतिक्रमण

प्रश्न १ – श्रमण प्रतिक्रमण में कितने अति–चार है ?

उत्तर – १२५ अतिचार ।

प्रश्न २ – १२५ अतिचार कौन से है ?

उत्तर – १४ ज्ञान के, ५ समकित के, ४ ईर्या समिति, २ भाषा समिति के, ४७ एषणा समिति के, २ आदान भाण्ड मात्र निक्षेपणा समिति के, १० उच्चार प्रस्त्रावण खेल मल सिंघाण परिस्थापनिका समिति के ३ मन गुप्ति के, ३ वचन गुप्ति के, ३ काय गुप्ति के ५ महाव्रत की, २५ भावना, २ रात्रि भोजन के, ५ सलेखना के ये कुल १२५ अतिचार है।

प्रश्न ३ – ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप के कितने

अतिचार है ?

उत्तर – १४ ज्ञान के, ५ दर्शन के, १०१ चरित्र के, ५ तप के।

प्रश्न ४ – अनाचार का मिच्छामि दुक्कड़ किस पाठ में दिया जाता है ?

उत्तर – स्वाध्याय तथा प्रतिलेखन दोष निवृति के पाठ मे।

प्रश्न ५ – असयम, मिथ्यात्व, अज्ञान आदि को वोसिराना और सयमादि को स्वीकार करना कौन से पाठ में है ?

उत्तर – नमो चउवीसाऐ।

प्रश्न ६ – श्रमण–सूत्र के कितने पाठ है ?

उत्तर – निद्रा दोष निवृति सूत्र, भिक्षा दोष निवृति सूत्र, स्वाध्याय व प्रतिलेखन दोष निवृति सूत्र, तैतीस बोल, नमो चउवीसाए सूत्र।

प्रश्न ७ – श्रमण–सूत्र का प्रथम पाठ कौनसा है ?

उत्तर — निद्रा दोष निवृति दोष।

प्रश्न ८ — श्रमण–सूत्र कौनसे आवश्यक में बोला जाता है ?

उत्तर — प्रतिक्रमण आवश्यक में।

प्रश्न ६ — श्रमण सूत्र किस आसन करना चाहिए ?

उत्तर — दायां घुटना ऊंचा और बाया घुटना नीचा रखकर बैठना।

प्रश्न १० —पगाम सिज्जाए और निगाम सिज्जाए में क्या अंतर है ?

उत्तर — पगाम सिज्जाए —मर्यादा से अधिक मोटी शय्या पर सोना। निगाम सिज्जाए—चिरकाल तक सोना।

प्रश्न ११ —गोयरग्ग चरियाए और भिक्खायरियाए में क्या अंतर है ?

उत्तर — गोरग्ग चरियाए—गाय की तरह अग्रभाग रूप में आहार पानी लेना।

भिक्खायारियाए–४२ दोष टालकर आहार पानी लेना।

प्रश्न १२ –दोनों वक्त प्रतिलेखन करना अनिवार्य है, यहा कहाँ बताया गया है?

उत्तर – प्रतिलेखन दोष निवृति के पाइ में। "उभओ काल भंडोवगरणस्थ अपडिलेहणाए. ।

प्रश्न १३ –तेतीस अशातना कौनसी है?

उत्तर – अरिहताण, असायणाए से लेकर वायणायरियस्स आसायणाए तक १९दोष तथा १४ ज्ञान के अतिचार, ऐसे कुल ३३ अशातना होती है। (दशाश्रुत स्कन्ध मे ३३अशातना भिन्न रूप में बताई)

प्रश्न १४ –श्रमण सूत्र में २४ तीर्थकरों की स्तुति कौन से पाठ में की गई है।

उत्तर – नमो चउवीसाए के पाठ मे

"तित्थयराण उसमाई महावीर पज्जवसाणाणं।

प्रश्न १५ –निर्ग्रन्थ प्रवचन की विशेषतांए बतलाइयें ?

उत्तर – निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य है, अनुत्तर है, केवली प्ररूपित है, प्रतिपूर्ण न्याय युक्त संदेह रहित प्रवचन है।

प्रश्न १६ –कौनसा प्रवचन मुक्ति मार्ग का प्रदाता है?

उत्तर – निर्ग्रन्थ प्रवचन।

प्रश्न १७ –"मै। श्रमण, सयत, विरत, पाप कर्मो का प्रत्याख्यान करने वाला निदान रहित, समयग् दृष्टि हूं–ऐसे दृढ विश्वास युक्त शब्द किस पाठ में बोले जाते है?

उत्तर – नमो चउवीसाए के पाठ में "समाणोह, सजय, विश्य, पडिहय, पच्चक्खाय, पाप कम्मे, अनियाणे दिट्ठिसपण्णो।

प्रश्न १८ –रजोहरण पात्र धारण करने वाले पाच महाव्रत धारी साधु है यह किन शब्दों में बताया ?

उत्तर – "साहु रयहरण गुच्छम पडिग्गह धरा पचमहव्वयधरा।"

प्रश्न १९– कौनसे साधु वन्दन के योग्य है ?

उत्तर – १८ हजार शील रूप रथ के धारक, पाच महाव्रत धारी, अक्षय आचार के पालक साधु वन्दन के योग्य है।

प्रश्न २०– तेतीस बोल में से हेय, ज्ञेय और उपादेय कितने बोल है ?

उत्तर – *हेय*–(छोडने योग्य) १ प्रकार का असयम, २ प्रकार का बधन, ३ दड, ३ शल्य, ३ गर्व, ३ विराधना, ४ कषाय, ४ सज्ञा, ४ विकथा, २ ध्यान (प्रथम के) ५ क्रिया, ५ कामगुण, ३ अशुभ लेश्या (प्रथम की) ७ भय, ८ मद, १३

क्रिया, १७ प्रकार का असयम, १८ प्रकार का अब्रंह्मचर्य, २० असमाधि के दोष, ११ सबल दोष, २६ पाप सूत्र, ३० महामोहनीय के स्थान, ३३ प्रकार की अशातना, ज्ञेय– (जानने योग्य)– ६ काया, १४ प्रकार के जीव, १५ परमाधामी देव, सूत्रकृताग सूत्र के, १६ अध्ययन, ज्ञात धर्म कथा के, १६ अध्ययन, सूत्रकृताग के २३ अध्ययन २४ प्रकार के देव, दशा श्रुत स्कन्ध वृहत्तकल्प सूत्र एव व्यवहार सूत्र के २६ अध्ययन २८ आचार कल्प, ३१ सिद्धों के गुण।

उपादेय–(स्वीकार करने योग्य) ३ गुप्ति, २ शुभ ध्यान, ५ महाव्रत, ५ समिति, ३ शुभलेश्या, नव वाड़ ब्रह्मचर्य की, १० प्रकार का श्रमण

धर्म, ११ श्रावक प्रतिमा, १२ श्रमण प्रतिमा २२ परिषह, ५ महाव्रत की २५ भावना, साधुजी के २७ गुण ३२ प्रकार के योग सग्रह।

नोट–सूत्रकृताग सूत्र, ज्ञाताधर्म कथा, दशाश्रुत स्कध, व्यवहार सूत्र, वृहतकल्प, आचार कल्प आदि मे विवेचित तत्व हेय ज्ञेय उपादेय तीनों ही हो सकते है।

प्रश्न २१– देवसी प्रतिक्रमण किसने किया ?

उत्तर – मृगावती जी।

प्रश्न २२– रायसी प्रतिक्रमण किसने किया ?

उत्तर – मेघ कुमार ने।

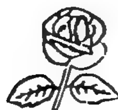
प्रश्न २३ –पक्खी प्रतिक्रमण किसने किया ?

उत्तर – शख जी, पोखली जी।

प्रश्न २४– चौमासी प्रतिक्रमण किसने किया?

उत्तर – शैलक राजर्षि।

प्रश्न २५— सवत्सरी प्रतिक्रमण किसने किया ?
उत्तर — उदायन राजा।
प्रश्न २६— मिथ्यात्व प्रतिक्रमण किसने किया ?
उत्तर — श्रेणिक राजा।
प्रश्न २७— अव्रत प्रतिक्रमण किसने किया?
उत्तर — प्रदेशी राजा।
प्रश्न २८— प्रमाद प्रतिक्रमण किसने किया ?
उत्तर — शैलक राजर्षि ।
प्रश्न २९— कषाय प्रतिक्रमण किसने किया ?
उत्तर — चण्डकौशिक
प्रश्न ३०— अशुभ योग प्रतिक्रमण किसने किया ?
उत्तर — पशन्न चन्द्र राजर्षि ।



सामान्य जानकारी

प्रश्न १– जैन किसे कहते है ?

उत्तर – जो जिनेश्वर भगवान के बताये हुये मार्ग पर श्रद्धा रखता है एव उसका पालन करता है वह जैन है।

प्रश्न २ – जिन किसे कहते है ?

उत्तर – जिन्होंने आत्म शत्रु, अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग–द्वेष, अन्राय पर विजय प्राप्त कर ली वे अरिहत जिन कहलाते है।

प्रश्न ३ – धर्म किसे कहते है ?

उत्तर – जो जीव को दुर्गति में जाने से बचाने और सुगति में ले जावे उसे धर्म कहते है।

प्रश्न ४ – मोक्ष का मार्ग क्या है ?

उत्तर – सम्यग् ज्ञान, सम्यग दर्शन, सम्यग्

चारित्र, सम्यग तप।

प्रश्न ५ – ज्ञान किसे कहते है ? सम्यग् ज्ञान का क्या अर्थ है ?

उत्तर – पदार्थ के विशेष धर्म को जानना ज्ञान है। भगवान द्वारा बनाये हुए जीव,अजीव आदि नव तत्वों का ज्ञान करना सम्याग् ज्ञान है।

प्रश्न ६ – सम्यग दर्शन किसे कहते है ?

उत्तर – अहिरत द्वारा बताये हुए तत्वों पर श्रद्धा करना।

प्रश्न ७ – सम्यग् चरित्र किसे कहते है ?

उत्तर – महाव्रत या अणुव्रत का पालन करना।

प्रश्न ८ – सम्यग् तप किसे कहते है ?

उत्तर – कर्म निर्जरा के उद्देश्य से उपवासादि १२ प्रकार के तप से तन एवं मन को तपाना तप है।

प्रश्न ९ – अभिगम किसे कहते है ?

उत्तर – स्थानक मे प्रवेश करते समय सत मुनि राजों के सन्मुख पहुँचने से पूर्व पालने करने योग्य नियम।

प्रश्न १० –अभिगम कितने है और कौन–कौन से है?

उत्तर – ५ है– सचित त्याग, अचित्त विवेक, उत्तरासन दृष्टि वदन और चित्त की एकाग्रता।

प्रश्न ११ –शरण कितनी है और किन–किन की ?

उत्तर – शरण ४ है (१) अरिहतो की (२) सिद्धों की (३) साधु (४) केवली प्ररूपित धर्म की।

प्रश्न १२ –पारमार्थिक पदार्थ कितने है ? नाम बताइये?

उत्तर – नव है–जीव, अजीव, पुण्य, पाप,

आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष।

प्रश्न १३— द्रव्य कितने है ओर कौन—कौन से ?

उत्तर — द्रव्य छ· है, धर्मास्तिकाय, अधर्मा स्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल द्रव्य जीवास्तिकाय, पुदगलास्तिकाय,।

प्रश्न १४— आरंभ का अर्थ क्या है ?

उत्तर — जीवों का उपघात करना, आश्रव की प्रवृति करना आरंभ है।

प्रश्न १५— अभवी जीव देवलोक में कहाँ तक जा सकते है ?

उत्तर — नव ग्रैवेयक तक।

प्रश्न १६— ज्ञान—दर्शन चारित्र में से परभव में जीव के साथ क्या चलता है ?

उत्तर — ज्ञान व दर्शन परभव में साथ जा सकता है, चारित्र नहीं।

प्रश्न १७— हलु कर्मी बनने के लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर – १८ पाप स्थान का त्याग एव सवर धर्म की आराधना।

प्रश्न १८— आत्मा का शत्रु कौन है ?

उत्तर – कषाय और इन्द्रियों की गुलाम आत्मा ही अपना शत्रु है ।

प्रश्न १६— जगत में सबसे भयकर बधन किसका ?

उत्तर – राग–द्वेष का।

प्रश्न २०— मोक्ष मे जाने की सबसे सरल आराधना कौनसी है ?

उत्तर – अष्ट प्रवचन माता (५ समिति एवं ३ गुप्ति) की आराधना।

प्रश्न २१— काम विजेता स्थूलीभद्र मुनिश्वर की यशोगाथा कब तक गाई जायेगी?

उत्तर – ८४ चौबीसी तक।

प्रश्न २२— देवता अपने आसन से किस कारण उठते है ?

उत्तर – तीर्थकर भगवान के च्यवन, जन्म,

दीक्षा केवल ज्ञान एव परिनिर्वाण के प्रसग आदि।

प्रश्न २३ –किसका उपकार चुकाना दुष्कर है?

उत्तर – माता–पिता, पोषक, धर्माचार्य का।

प्रश्न २४– परिग्रह कितने प्रकार का है ?

उत्तर – दो प्रकार का बाह्य परिग्रह और आभ्यतरण परिग्रह।

प्रश्न २५– बाह्य परिग्रह कितने प्रकार का है और कौन–कौन सा है ?

उत्तर – नव प्रकार का (१) क्षेत्र (२) वास्तु (३) धन (४) धान्य (५) दासी (६) दास (७) द्विपद (८) चौपद (९) कुविय धातु।

प्रश्न २६– आभ्यन्तर परिग्रह कितने प्रकार है ?

उत्तर – १४ प्रकार का है– क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुसंक

वेद और मिथ्यात्व मोहनीय।

प्रश्न २७– और अन्य प्रकार से परिग्रह कितने प्रकार का है ?

उत्तर – तीन प्रकार का है–शरीर, कर्म, उपधि।

प्रश्न २८– चार प्रकार से अधकार कब होता है?

उत्तर – (१) अरिहत का विरह होता है तब अधकार होता है।

(२) अरिहत प्ररूपित् धर्म का विच्छेद होता है तब अधकार होता है।

(३) चौदह पूर्व का विच्छेद होता है तब अधकार होता है।

(४) बादर अग्नि का विच्छेद होता है तब अधकार होता है।

प्रश्न २६ –तारा टूटे या नहीं ?

उत्तर – तारा टुटता नहीं परन्तु तीन कारणो से तारों का रूप चलता है

(१) वैक्रिय करते समय (२) मैथुन सेवते (३) और एक विमान से दूसरे विमान में जाते समय वे तैजस पुद्‌गलों को नीचे डालता है उसे हम कहते है कि तारा टुटे।

प्रश्न ३० —देव को पश्चाताप किन–किन कारणों से होता है ?

उत्तर — (१) पूर्व भव में विनय वैयावृत्य कम किया हो।

(२) अधिक काल तक दीक्षा न पाली हो।

(३) सूत्र अधिक न पढ़े हो तो।



(१) खाना क्या ?	गम
(२) पीना क्या ?	वीतराग की वाणी
(३) बिछोना क्या ?	पुण्य
(४) ओढना क्या ?	शील
(५) देखना क्या ?	स्वदोष
(६) जानना क्या ?	वीतराग धर्म
(७) लेना क्या ?	ज्ञान
(८) देना क्या ?	दान
(९) छोड़ना क्या ?	मिथ्यात्व
(१०) आदरना क्या ?	समकित
(११) पालना क्या ?	जीव–दया
(१२) काटना क्या ?	कर्म
(१३) मारना क्या ?	मान
(१४) रहना कहाँ ?	लोक में
(१५) जाना कहाँ ?	मोक्ष में
(१६) धर्म का पिता कौन ?	ज्ञान
(१७) धर्म की माता कौन ?	दया

(१८) धर्म का पुत्र कौन ? संतोष
(१९) धर्म की पुत्री कौन ? समता
(२०) धर्म की स्त्री कौन ? सुक्रिया
(२१) धर्म का भाई कौन ? सत्य
(२२) धर्म की बहिन कौन ? सुबुद्धि
(२३) धर्म का मूल क्या ? क्षमा
(२४) पाप का पिता कौन ? लोभ
(२५) पाप की माता कौन ? हिंसा
(२६) पाप का भाई कौन ? झूठ
(२७) पाप की बहिन कौन ? तृष्णा
(२८) पाप की स्त्री कौन ? कुमति
(२९) पाप का पुत्र कौन ? लालच
(३०) पाप की पुत्री कौन ? माया
(३१) पाप का मूल क्या ? क्रोध
(३२) काया का श्रृंगार क्या ? शील
(३३) शील का श्रृंगार क्या ? तप
(३४) तप का श्रृंगार क्या ? क्षमा

(३५) क्षमा का श्रृगार क्या ? मौन
(३६) मौन का श्रृगार क्या ? ध्यान
(३७) ध्यान क्या श्रृगार क्या ? ज्ञान
(३८) ज्ञान का श्रृगार क्या ? सवर
(३९) सवर का श्रृगार क्या ? निर्जरा
(४०) निर्जरा का श्रृगार क्या ? शुक्लध्यान
(४१) शुक्लध्यान का श्रृगार क्या? केवलज्ञान
(४२) केवलज्ञान का श्रृगार क्या ? मोक्ष
(४३) मोक्ष का श्रृगार क्या ? अव्याबाध सुख
(४४) गुणों का मूल क्या ? विनय
(४५) सभी धर्मों का मूल क्या ? दया
(४६) क्लेश का मूल क्या ? हसी
(४७) रोग का मूल क्या ? अजीर्ण
(४८) कर्म का मूल क्या ? राग–द्वेष
(४९) मृत्यु का मूल क्या ? देह
(५०) ससार का मूल क्या ? कषाय
(५१) रात्रि का सगीतकार कौन ? मच्छर

(५२) दूध से उज्जवल क्या ? यश
(५३) अक्ल का भोजन क्या ? विचार
(५४) पुरुषार्थ की संतान कौन ? प्रारब्ध
(५५) तीन घंटे की जेल कौनसी ? सिनेमा
(५६) विना पाल का सरोवर कौन ? ज्ञान
(५७) नरक में जाने का लाइसेन्स क्या ? अनंतानुवंधि कषाय
(५८) सिद्ध का सेम्पल क्या ? सामायिक
(५९) विकास का सोपान क्या ? वैराग्य
(६०) कलियुग का अमृत ? चाय
(६१) रसोई का ग्राहक कौन ? पेट
(६२) कमाई का केन्द्र कौनसा ? कर्मभूमि
(६३) सच्ची साक्षी किसकी ? अपनी आत्मा की
(६४) बल का सहयोगी कौन ? हिम्मत
(६५) बुरी जगह क्या ? एकांत
(६६) पवन से तेज गति किसकी ? मन की

(६७) दुनिया में सबसे बड़ी खान क्या ? — ओलखाण

(६८) दुनिया में सबसे मीठी चीज क्या ? — गरज

(६९) राजा की अनमोल वस्तु क्या ? — राजनीति

(७०) आकाश की ट्यूबलाईट कौन ? — चन्द्र–सूर्य

(७१) लेखक की प्यारी वस्तु क्या ? — लेखन और व्याख्यान

(७२) जीवन के निर्माता कौन ? — माता–पिता एव गुरु

(७३) गरीबों का आमुषण क्या ? — मेहनत

(७४) जैन दर्शन का मूल सिद्धान्त क्या ? — अनेकातवाद

(७५) दोस्ती का जहर क्या ? — सदेह

(७६) प्रेम की कैंची क्या ? — उधार

(७७) सभ्य लोगों की भीख क्या ? — चन्दा

(७८)	स्वर्ग का सूख किसमें में ?	ईमानदारी में
(७९)	नहीं देने योग्य क्या ?	गाली
(८०)	नौकरी की योग्यता क्या ?	मैट्रिक ओर ग्रेज्यूएट
(८१)	ससार में जागृत कौन ?	विवेकी और सम्यक्तवी
(८२)	ससार में सुप्त कौन ?	अविवेकी "मिथ्यात्वी"
(८३)	संसार में मदिरा कौनसी ?	मोह
(८४)	संसार में अमृत कौनसा ?	जिनवाणी
(८५)	ससार में अग्नि कौनसी ?	ईर्ष्या
(८६)	ससार में दरिद्र कौन ?	तृष्णावान मनुष्य
(८७)	ससार मे श्रीमत कौन ?	संतोषी
(८८)	ससार में चतुर कौन ?	जन्म सफल करने वाला
(८९)	संसार में मूर्ख कौन ?	समय निरर्थक करने वाला

(९०) ससार में शत्रु कौन ? मनोविाकर
(९१) ससार में मित्र कौन ? आत्मा
(९२) ससार में नैत्र कौन ? सद्विद्या
(९३) ससार मे अनित्य क्या ? पौद्गलिक वस्तु
(९४) ससार में अचल कौन ? परमात्म स्वरूप
(९५) ससार में अधा कौन ? कामी
(९६) शुरवीर कौन ? मनोविजेता
(९७) साधु कौन ? जो आत्मा को साधे
(९८) ब्राह्मण कौन ? जो आत्मतत्वज्ञ हो
(९९) देव कौन ? जो दिव्य गुणों का धारक हो
(१००) क्षत्रिय कौन ? नष्ट होते हुए प्राणी की रक्षा करे वह।



क्या करना श्रेष्ठ है ?

(१) क्या देना — सुपात्रदान
(२) क्या करना — परोपकार
(३) क्या खाना — गम
(४) क्या पीना — गम
(५) क्या पालना — शील
(६) क्या टालना — कुसगत
(७) क्या छोड़ना — कुव्यसन (पाप)
(८) क्याा आदरना — धर्म
(६) किसका ध्यान — अरिहत देव का
(१०) किसकी सेवा — निर्ग्रन्थ गुरु की
(११) किसमें रमना — स्वाध्याय में

क्या पुनः मिल सकता है

(१) खोया हुआ — धन
(२) खोया हुआ — स्वास्थ्य
(३) भूली हुई — विद्या
(४) छीना हुआ — राज्य

क्या नहीं ?

(१) क्रोध के समान विष नहीं।
(२) क्षमा के समान अमृत नहीं।
(३) लोभ के समान दुख नहीं।
(४) सतोष के समान सुख नहीं।
(५) पाप के समान वैरी नहीं ।
(६) धर्म के समान मित्र नहीं
(७) कुशील के समान भय नहीं।
(८) शिल के समान शरण नहीं।
(६) मिथ्यात्व के समान अधकार नहीं।
(१०) ज्ञान के समान प्रकाश नहीं।

कौन क्या नहीं हो सकता ?

(१) प्रमादी सुखी नहीं हों सकता।
(२) ऊघने वाला विद्याभ्यासी नहीं हो सकता।
(३) ममत्वी वैरागी नहीं हो सकता।
(४) ईर्ष्यालु अच्छा नहीं देख सकता।

(५) चिता वाला शाति से नहीं सो सकता है।
(६) स्वार्थी परोपकारी नहीं हो सकता है।
(७) हिंसक दयालु नहीं हो सकता।

कैसे जाने भव्य और अभव्य को

(१) जो पाप बंधन से डरे वह भव्य और जो पाप बध से नहीं डरे अभव्य।
(२) जो मोक्षाभिलाषी है वह भव्य, जो मोक्षाभिलाषी नहीं वह अभव्य।
(३) सर्वज्ञता को स्वीाकरे वह भव्य, नहीं माने वह अभव्य।
(४) मैं भव्य हूँ या अभव्य हूँ ऐसी शका जिसे हो वह भव्य और जिसे यह शका न हो वह अभव्य।
(५) जो आत्मा के स्वरूप को जान सके भव्य, और जो नहीं जान सके अभव्य

(६) आत्मा एव पुद्गल का भेद विज्ञान जिसे हो वह भव्य और जिसे भेद विज्ञान न हो वह अभव्य।

(७) भव्य के ५ ज्ञान ३ अज्ञान सत्ता में होते है, अभव्य के ३ अज्ञान ही होते है।

(८) भव्य के सम्यक्तव मोहनीय, मिश्र मोहनीय की भजना होती है, अभव्य के ये दो प्रकृति नहीं होती है।

(९) भव्य को मोहनीय की २८ प्रकृति की भजना होती है अभव्य को २६ प्रकृति की नियमा होती है।

(१०) भव्य १४ पूर्वो का ज्ञाता हो सकताा है अभव्य सिर्फ नौवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु तक द्रव्यत जान सकता है।

(११) भव्य में मोक्ष प्राप्ति की योग्यता होती है, अभव्य में नहीं।

(१२) भव्य को क्षयोपशम समकित के रहते

शकादि होते है पर क्षायिक सम्यक्त्व होने पर नहीं होते है। कितु अभव्य को शकादि हाते ही नही।

(१३) भव्य समकित प्राप्त नहीं करता है तब तक मिथ्यात्वी रहता है कितु अभव्य सदैव मिथ्यात्वी ही रहता है।

(१४) भव्य को भव भ्रमण से भय लगता है, अभव्य को नहीं।

(१५) भव्य को सत्य श्रद्धान रहता है, अभव्य को नहीं।

(१६) भव्य के अहिंसात्मक भाव होते है, अभव्य के हिंसात्मक भाव रहते है।

(१७) भव्य "मेरी मुक्ति होगी या नहीं " इस विचार से कम्पित रहता है अभव्य नहीं।

(१८) भव्य को आत्म–विश्वास होता है अभव्य को नहीं।



घर का आभुषण

(१) प्रेम घर की प्रतिष्ठा है।
(२) आतिथ्य घर का वैभव है।
(३) व्यवस्था घर की शौभा है।
(४) समाधान घर का सुख है।

निम्न वाक्य कौन बोला और किसने सुना

	बोला	सुना
(१) आप स्वय अनाथ हो	अनाथीमुनि	श्रेणिक
(२) अभी काल करे तो ७ वीं नरक में जाय	भगवान महावीर	श्रेणिक
(३) तू कठियारा जैसा मुर्ख है।	केशीस्वामी	प्रदेशी–राजा

	बोला	सुना
(४) जाओ रोते हुए सिह अणगार को ले आओ	भगवान महावीर	शिष्यों को
(५) पुरोहित ने वमन किया और तुम चाट रहे हो	कमलावती	इक्षुकार राजा
(६) मैं मागु तब शाल के दाने वापस देना	धन्ना सेठ	चार बहुओं
(७) निर्वद्य स्थान मे परठ आओ	धर्मघोष	धर्मरूचि
(८) १२ वीं प्रति अगीकार करने की भावना है	गजमुनि	भ. नेमिनाथ
(६) मुझे प्रतिबोध	तेतली पुत्र	पोहिला

	बोला	सुना
का वचन दो तो दीक्षा दूँ		
(१०) भते मिच्छामि दुक्कड आपको लेना चाहिए	आनन्द	इन्द्रभूति
(११) मुझे बच्चे खिलाने का मौका नहीं मिला	देवकी	कृष्ण महाराज
(१२) हे देवानुप्रिय ! यह तुम्हारी लब्धि का आहार नहीं है	भ० नेमिनाथ	ढढण
(१३) प्रभु ! जीव सोता भला या जागता	जयन्ति	भ०महावीर

	बोला	सुना
(१४) ऐसे अधेरे मे सर्प दिख गया	चन्दना	मृगावती
(१५) तूं भी अभय-दाता बन	गर्दभाली	सयति-राजा
(१६) मैं आपका नाथ बनता हूँ	श्रेणिक	अनाथी
(१७) हमारे राजा को आस्तिक बनाओ	चित्त सारथी	केशी श्रमण
(१८) गर्भ सहरण करो	इन्द्र महाराज	हरिण गमेषी
(१९) अभिमान के हाथी के नीचे उतरो	ब्राह्मी सुन्दरी	बाहुबली
(२०) समय मात्र का प्रमाद मत करो	भ. महावीर	गौतम

	बोला	सुना
(२१) अभी मैं लौहार को लेकर आता हूँ	धन्ना सेठ	चन्दना
(२२) बेटा ! हमारे नाथ पधारे हैं	भद्रामाता	शालीभद्र
(२३) यह कायर का नहीं महावीर का पाठ है	पुज्य धर्मदासजी	सथारे से डिगे शिष्य
(२४) भावी तीर्थंकर होने से तुम्हारे गुणगान करता हूँ	भरत	मरीचि
(२५) तूँ सातवें दिन मरकर नरक में जायेगी	महाशतक	रेवती
(२६) भ.के दरबार में प्राणी मात्र का अधिकार है	सुदर्शन	अर्जुन–माली

	बोला	सुना
(३५) मोम के दॉत से लोहे के चने चबाने के समान सयम दुष्कर है।	मृगामाता	मृगापुत्र

किससे किसको लाभ हुआ

प्रश्न १– माता (दीक्षित माता) से
उत्तर – अरणक मुनि को
प्रश्न २– पिता (श्रेणिक) से
उत्तर – अभय कुमार को
प्रश्न ३– भाई (जयघोष) स
उत्तर – विजय घोष को
प्रश्न ४– भाभी (राजमति) से
उत्तर – रथनेमि को

प्रश्न ५— पति (अवन्ति सुकुमार) से
उत्तर — ३१ पत्नियों को
प्रश्न ६— पत्नि (कमलावती) से
उत्तर — इक्षुकार राजा को
प्रश्न ७— पुत्रो से (देमद्र यशोभद्र) से
उत्तर — भृग पुरोहित को
प्रश्न ८— जमाई (जम्बू) से
उत्तर — सास श्वसुर को
प्रश्न ९— बहन (ब्राह्मीजी सुन्दरी) से
उत्तर — बाहुबली को
प्रश्न १०— बहनाई (धन्ना) से
उत्तर — शालीभद्र को
प्रश्न ११— भाणजी (चदनबाला) से
उत्तर — मृगावती को
प्रश्न १२— मौसी (मृगावती) से
उत्तर — चन्दनबाला को
प्रश्न १३— श्वसुर (सौमिल ब्राह्मण) से

उत्तर – गजसुकुमाल को

प्रश्न १४– सास (सुलसा) से

उत्तर – ३२ बहुओं को

प्रश्न १५– पुत्रवधु (अजना) से

उत्तर – सास केतुमति को



माँस — मदिरा



(अन्डा, मछली, मॉस, शराब, ताडी)
से बचिये

जैनत्व, वैष्णत्व, हिन्दुत्व

की रक्षा करिये

जितनी प्यारी आपको अपनी जान है
उतनी ही प्यारी हर प्राणी को अपनी जान है - महावीर